



अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-02

कल्पादि संवत् 1972949117

सम्पादक

मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 05 अप्रैल से 11 अप्रैल 2017 तक

चैत्र शुक्ल नवमी से चैत्र शुक्ल पूर्णिमा संवत् 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये

पृष्ठ संख्या 12

चाहिए सुरक्षा
का वादा..

पृष्ठ- 3

उत्तम स्वास्थ्य
के लिये...

पृष्ठ- 4

हिन्दू नूतन
वर्ष महत्ता...

पृष्ठ- 5

मर्यादा
पुरुषोत्तम...

पृष्ठ- 9

नाच न आये
आंगन..

पृष्ठ- 12

- आपसी सहमति या विशेष कानून
- पेप्सी-कोक शीतल पेय या घातक षड्यंत्र
- सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण
- इतिहास पुर्नलेखन, गलत फतवा और वहाबी जिहाद
- हिन्दू लुटे, पिटे या मरे कौन कहे

बिहार में सभी बूचड़खाने व मांस की बिक्री पर रोक लगायें नीतिश-हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

बिहार के नालांदा जिलातर्गत राजगीर में बिहार प्रदेश हिन्दू महासभा की राज्य कार्यकारिणी समिति की बैठक आयोजित की गई। प्रदेश कार्यकारिणी समिति की बैठक में राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री वीरेश त्यागी सम्मिलित हुए। बैठक की अध्यक्षता प्रदेशाध्यक्ष डॉ. जर्नादन उपाध्याय ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतिश कुमार से बिहार में सभी बूचड़खानों एवं मांस की बिक्री पर रोक लगाने की मांग की। श्री शर्मा ने कहा कि कानून व्यवस्था को सुधारने के लिए बूचड़खानों को बंद करने की आवश्यकता है। श्री शर्मा ने बिहार में बढ़ते

शेष पृष्ठ 11 पर



प्लास्टिक के तिरंगे पर सरकार सख्त, गृह मंत्रालय ने राज्यों को जारी की एडवायजरी

राष्ट्रध्वज का सम्मान सुरक्षित हो -हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

केन्द्र सरकार ने सभी राज्य सरकारों से तिरंगे के अपमान को रोकने के लिए ध्वज संहिता का सजगता से पालन कराने को कहा है। केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने सभी राज्य एवं संघ शासित सरकारों और केन्द्रीय मंत्रालयों को जारी परामर्श में राष्ट्रध्वज का सम्मान सुनिश्चित करने वाले कानूनी प्रावधानों का सख्ती से पालन कराने को कहा है। मंत्रालय



ने इसके लिए संबद्ध प्राधिकारियों को ध्वज संहिता 2002 और राष्ट्रीय गौरव से जुड़े प्रतीक चिन्हों का अपमान रोकने संबंधी कानून 1969 के प्रावधानों का पालन सुनिश्चित करने को कहा है। मंत्रालय ने माना कि सरकारी आयोजनों के अलावा सांस्कृतिक आयोजन और खेल स्पर्धाओं में प्रायः कागज या कपड़े के बजाय प्लास्टिक के तिरंगे का जमकर इस्तेमाल किया जाता है। आयोजन के बाद तिरंगे को लोग इधर उधर फेंक कर चले जाते हैं। ऐसे में प्लास्टिक के झंडे का लंबे समय तक निस्तारण नहीं होने के कारण राष्ट्रध्वज के अपमान की आशंका बढ़ जाती है। इसके मद्देनजर गृह मंत्रालय ने इन आयोजनों में केवल जैविक तरीके से नष्ट हो सकने योग्य कागज के बने तिरंगे का ही इस्तेमाल करने को कहा है। साथ ही आयोजकों से कागज के बने तिरंगे का निस्तारण भी ध्वज संहिता के प्रावधानों के मुताबिक सम्मानजनक तरीके से कराने की जिम्मेदारी का पालन सख्ती से सुनिश्चित करने को कहा है। ऐसा नहीं होने पर स्थानीय प्रशासन को राष्ट्रीय गौरव से जुड़े प्रतीक चिन्हों के अपमान को रोकने संबंधी कानून के प्रावधानों के तहत सख्त कार्रवाई करनी होगी। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष

शेष पृष्ठ 11 पर

सेवक व साधक को सुंदर सीख

(श्री हनुमान जयंती: १० व ११ अप्रैल)

साभार-ऋषि प्रसाद

जब सीताजी की खोज हेतु हनुमानजी सागर-तीर पर खड़े थे और सभी वानर वीर उस पार जाने का विचार कर रहे थे तब जाम्बवानजी ने हनुमानजी को उत्साहित करने के लिए कहा-

"हे हनुमान! तुम पवन के पुत्र हो और बल में पवन के समान हो। तुम बुद्धि, विवेक और विज्ञान की खान हो। जगत में ऐसा कौन-सा काम है जो तुमसे न हो सके! श्रीरामजी के कार्य के लिए ही तो तुम्हारा अवतार हुआ है।" जाम्बवानजी के वचन हनुमान जी के हृदय को बहुत अच्छे लगे। क्यों? क्योंकि रामकाज को उत्साहित करने के लिए बोल रहे थे। जो कोई आपके उत्साह को तोड़ने की बात कहे, समझना कि 'यह हमारा हितैषी नहीं है।' पर आपका वह कार्य शास्त्र और संत सम्मत भी होना चाहिए। बात तो ऐसी करनी चाहिए कि जिससे सामने वाले व्यक्ति के मन में साधन-भजन हेतु व अपने कर्तव्य को पूरा करने में और उत्साह बढ़े।

संत तुलसीदास जी कहते हैं:

यह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा।

चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा॥

छोटे-छोटे बंदरों को भी हनुमानजी ने प्रणाम किया क्योंकि हनुमानजी में मान की इच्छा नहीं है। मान का हनन किया तभी तो वे 'हनुमान' हैं। हमको वे सुंदर सीख देते हैं कि सेवक को कैसे मान-मत्सर (द्वेष, क्रोध) से रहित होना चाहिए। केवल मानरहित रहेगा तो हृदय में अभिमान आ जायेगा। अतः आगे तुरंत लिख दिया कि हृदय में अपने स्वामी श्रीरामजी को धारण करके प्रसन्न होकर चले। सेवक के मन में प्रसन्नता होनी चाहिए कि 'मैं मेरे स्वामी का सेवाकार्य कर रहा हूँ या करने जा रहा हूँ।' अगर समर्पण, अहोभाव एवं प्रसन्नता नहीं रखेगा तो मन में फल की इच्छा या परिणाम का भय आ जायेगा।

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर।

कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर॥

वहीं सागर के किनारे एक बड़ा सुंदर पर्वत था, जिस पर जाम्बवानजी के वचनों से उत्साहित हुए हनुमानजी खेल में (अनायास ही) कूदकर ऊपर चढ़ गये और उस पर से बड़े वेग से उछलकर श्रीरामजी के अमोघ बाण की तरह चले अर्थात् साधक को अपनी साधना में तीर की तरह सीधा लक्ष्य की तरफ बढ़ना चाहिए, न दायें देखे न बायें। जैसे अमोघ बाण अपने लक्ष्य को बेधकर ही रुकता है, ऐसे ही स्वामी की सेवा में सेवक को भी हमेशा सावधान और सफल होने के लिए कृतनिश्चय (निश्चय करने वाला) होना चाहिए। 'किसी भी कारण चूकना नहीं है' ऐसा निश्चय मन में रखना चाहिए।

समुद्र ने देखा कि रामजी के दूत हनुमानजी आये हैं तो विचार करके मैनाक पर्वत को कहा: "तुम श्रमहारी बन जाओ, इनको थोड़ा विश्राम दो।" ऐसे ही सेवक जब सेवा करता है तो मान-सम्मान, यश मिलता है, लोग आदर-सत्कार करते हैं पर सेवक को उसमें फँसना नहीं है, रुकना नहीं चाहिए। तब क्या करना चाहिए? हनुमानजी उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।

हनुमानजी ने उसका बिल्कुल तिरस्कार नहीं किया, हाथ से छुआ अर्थात् अनादर नहीं किया।

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम।

अर्थात् रामजी का कार्य पूर्ण किये बिना मेरे लिए विश्राम कहाँ!

इसी तरह अपने साध्य को पाये बिना साधक को विराम वर्जित है। राही को अपनी मंजिल पाये बिना रुकना नहीं

शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष - आफिस में कई तरह के लोग होते हैं। सभी लोगों के साथ सामंजस्य बनायें अन्यथा सहकर्मियों के साथ खटपट हो सकती है। सामाजिक सम्बन्धों में बढ़ोत्तरी हो सकती है। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होने की सम्भावना है।

वृष - इस सप्ताह कोई खोई हुई वस्तु की प्राप्ति होगी। मित्रों व रिश्तेदारों से सम्बन्धों में मधुरता रखें। नयी कार्य योजनाओं को शीघ्र ही प्रारम्भ करें। आय में वृद्धि होगी। जो लोग व्यापार के क्षेत्र में हैं उनमें से अधिकतर की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

मिथुन : सप्ताह के आरंभ में आप बौद्धिक कार्य और चर्चाओं में व्यस्त रहेंगे। प्रियपात्र के साथ मिलन रोमांचक रहेगा। परिवार के सदस्यों के साथ बहुत अच्छा मेल रहेगा। आपका हर प्रयास सफल होगा लेकिन उसमें समय की पाबन्दी अपरिहार्य है।

कर्क - आपकी समस्याओं का समाधान स्वयं आपके पास है, सिर्फ अपने-आपको ठीक से देखने की जरूरत है। क्योंकि आप सारी दुनिया को देखते हैं, किन्तु स्वयं को कभी ठीक से देखा नहीं। नौकरी से जुड़े लोगों को अपने स्थानान्तरण की चिन्ता सता सकती है।

सिंह - यह सप्ताह आपके लिए कुछ चुनौतियों भरा रहेगा। मित्रों से नजदीकियां बढ़ेंगी। स्वाध्याय से मन को शांति मिलेगी। आपको परिजनों के साथ तालमेल बिठाने में कठिनाई महसूस होगी। धैर्य से स्थितियों में सुधार होगा। मौसम से सम्बन्धी बीमारियां आप पर अटैक कर सकती हैं।

कन्या - इस सप्ताह आप नये कार्यों को लेकर असमंजस की स्थिति में पड़ सकते हैं इसलिए मन की दृढ़ता व आत्म-विश्वास की मिठास बनायें रखना आपके लिए अति आवश्यक है। आपकी स्वतन्त्र विचारधारा मुश्किलों को आसान कर देगी।

तुला - परिवार की ओर से मिल रहे सहयोग में विराम लग सकता है जिससे हकीकत का सामना होगा। कठिन परिस्थितियां सामने आ सकती हैं। आपके पथ प्रदर्शक दूरी बना सकते हैं। योजनायें लम्बित हो सकती हैं।

वृश्चिक : आमदनी से ज्यादा खर्च रहेगा। फिजूलखर्च टालें। उसके अलावा वाहन चलाने में संभालें। आपके स्वभाव में आवेश या उग्रता संबंधों में खटास पैदा कर सकती है। जो लोग गठिया रोग से पीड़ित हैं वो सावधानी रखें। रुके हुए कार्यों में प्रगति होने के संकेत हैं।

धनु - इस सप्ताह आपको सावधान रहने की जरूरत है अन्यथा किसी महिला के कारण तनाव ग्रस्त रहना पड़ सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। योजनाबद्ध तरीके से किये कार्यों में सफलता मिलने की सम्भावना है। महिलायें आफिस में अपनी भूमिका स्वयं निर्धारित करें।

मकर - इस सप्ताह आप कुछ कार्यों को लेकर असमंजस की स्थिति में पड़ सकते हैं इसलिए मन की स्वच्छता व हृदय की मिठास बनायें रखना आपके लिए अति आवश्यक है। आपकी स्वतन्त्र विचारधारा मुश्किलों को आसान कर देगी।

कुम्भ - आपकी क्रोध व आक्रामक वाली स्थिति इस सप्ताह आपको मुसीबत में डाल सकती है, अतः इस पर नियन्त्रण करने का प्रयास करें। मित्रों के साथ अत्यधिक समय न बितायें अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न होने की आशंका है।

मीन - इस सप्ताह आप असमंजस वाली स्थिति में रहेंगे। खोये हुये अवसर प्रतिष्ठा आदि प्राप्त करने के संघर्ष रहेंगे। धन के लेन-देन में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अपनी काबलियत के दम पर आप परिचर्चा का केन्द्र बने रहेंगे। लंबे अंतर की यात्रा या धार्मिक स्थल की मुलाकात का योग है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।

ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥

उन निरन्तर मेरे ध्यान आदि में लगे हुए और प्रेमपूर्वक भजने वाले भक्तों को मैं वह तत्त्व ज्ञानरूप योग देता हूँ, जिससे वे मुझको ही प्राप्त होते हैं॥१०॥

तेषामेवानुक्तमर्थमहमज्ञानजं तमः।

नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता॥

हे अर्जुन! उनके ऊपर अनुग्रह करने के लिये उनके अन्तःकरण में स्थित हुआ मैं स्वयं ही उनके अज्ञानजनित अन्धकारों को प्रकाशमय तत्त्वज्ञानरूप दीप के द्वारा नष्ट कर देता हूँ॥११॥

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।

पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्॥

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिनारदस्तथा।

असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे॥

अर्जुन बोले-आप परम ब्रह्म, परम धाम और परम पवित्र हैं, क्योंकि आपको सब ऋषिगण सनातन, दिव्य पुरुष एवं देवों का भी आदिदेव, अजन्मा और सर्वव्यापी कहते हैं। वैसे ही देवर्षि नारद तथा असित और देवल ऋषि तथा महर्षि व्यास भी कहते हैं और आप भी मेरे प्रति कहते हैं॥१२-१३॥

चाहिए सुरक्षा का वादा

२७ सालों से पलायन की त्रासदी सहन करने वाले कश्मीरी पंडित परिवार कश्मीर वापसी के लिए तैयार हैं। बस उन्हें आश्वासन चाहिए सुरक्षा का। इस सुरक्षा के आश्वासन के प्रति उनका कहना है कि वे आश्वासन सरकार से ही नहीं बल्कि आतंकियों से भी चाहते हैं। लेकिन कश्मीर में हालात को युद्ध के रूप में निरूपित करने वाले पक्ष उन्हें सुरक्षा का आश्वासन देने को तैयार नहीं हैं। कश्मीर में अलगाववादी आंदोलन छेड़ने वाले कश्मीर की आजादी का सपना देख रहे हैं तो जम्मू और लद्दाख की जनता चाहती है कि दोनों संभागों को कश्मीर से अलग कर दिया जाए। ऐसे में आतंकवाद का शिकार होने वाला कश्मीरी पंडित समुदाय अपने विकल्प के तहत कश्मीर के एक भूभाग पर अधिकार चाहता है। यही अधिकार उनकी नजर में कश्मीर समस्या का हल है। यह सच्चाई है कि १९८८ के अंत में कश्मीर घाटी के विभिन्न भागों से लाखों की संख्या में अपना घर-बार त्यागने वाले बस एक छोटी सी बात को लेकर अपनी कश्मीर वापसी को रोके हुए हैं। किसी के लिए यह बात छोटी सी हो सकती है लेकिन कश्मीरी पंडितों के लिए नहीं क्योंकि इसी के साथ उनकी जिन्दगी और मौत का सवाल जुड़ा हुआ है। यह छोटी सी बात है कश्मीर में सुरक्षा का आश्वासन। अर्थात् वे इसके प्रति आश्वस्त हो जाना चाहते हैं कि कश्मीर वापस लौटने पर वे सुरक्षित रहेंगे। इस संबंध में घर वापसी के इच्छुक संगठनों द्वारा अतीत में तत्कालीन पत्र भी लिखे गए थे। प्रति अपने रुख अवगत करवाने गए पत्रों में बस गई थी कि सरकार का जो प्लान उन्हें

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष



सरकारों को थे। घर वापसी से सरकार को के लिए लिखे यही बाधा बताई ने घर वापसी कई बार थमाया

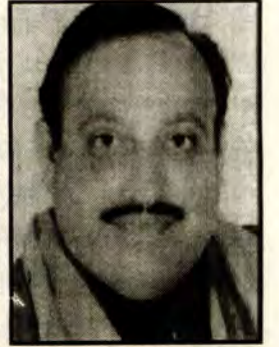
उसमें सुरक्षा के प्रति कुछ भी नहीं कहा गया। हालांकि सरकार कहती है कि उनके लिए सुरक्षित क्षेत्र अर्थात् सेफ जोन बनाए जाएंगे कश्मीर में। लेकिन कश्मीरी पंडित समुदाय का खवाल है कि ऐसे में जबकि कश्मीर घाटी में राकेटों, मिसाइलों, मोर्टार आदि जैसे युद्ध में इस्तेमाल होने वाले हथियारों का खुल कर इस्तेमाल हो रहा है सेफ जोन क्या सचमुच सेफ होंगे। इस पर सरकार ने खामोशी धारण की हुई है। वैसे कश्मीरी पंडित समुदाय की चिंता सही है। कश्मीर की स्थिति को सभी पक्ष युद्ध निरूपित करते रहे हैं और ऐसे में कौन किसे सुरक्षा देगा यह बड़ी हास्यास्पद बात लगती है। हालांकि इसी सोच को दिमाग में रख कर कश्मीरी पंडित समुदाय ने आतंकियों से भी सुरक्षा का आश्वासन चाहा था। उन्हें वहां से भी इंकार ही मिला था। बताया जाता है कि कश्मीरी पंडित समुदाय ने सर्वदलीय हुरियत कांफ्रेंस के नेताओं को इसके प्रति पत्र भी लिखे थे जिसके जवाब में हुरियत का कहना था कि युद्ध के दौरान किसी को किसी प्रकार की सुरक्षा का आश्वासन देने का अर्थ होता है उस पक्ष के साथ झूठ बोलना। नतीजतन घर वापसी के लिए तैयार होने वाले कश्मीरी पंडित समुदाय के लाखों परिवार वर्तमान हालात तथा अन्य असुविधाओं के चलते भी घर वापसी के लिए तैयार हैं। यह सच है कि अपने विकल्प के बतौर कश्मीरी समुदाय चाहता है कि जम्मू कश्मीर की उलझन को सुलझाने की खातिर उसके चार हिस्से किए जाएं। हालांकि अन्य ताकतें इसके तीन हिस्से करने की मांग कर रही हैं। चौथा हिस्सा वह राज्य का नहीं चाहता बल्कि कश्मीर घाटी का चाहता है जिसे वे होमलैंड आदि का नाम देते हैं। ऐसा सुझाव देने वाले कश्मीरी पंडित समुदाय के संगठनों में सबसे आगे पनून कश्मीर अर्थात् हमारा कश्मीर नामक गुट है। उसके सुझाव के अनुसार इसे केंद्र शासित प्रदेश के रूप में तैयार किया जा सकता है जहां वह कश्मीरी समुदाय सुख-चैन तथा अलगाववादी आतंकवादी संगठनों की पहुंच से दूर होकर रह सकेगा जहां मानवाधिकारों के उल्लंघन की कोई बात ही नहीं होगी और अल्पसंख्यक समुदाय आजादी महसूस करेगा। हालांकि राज्य सरकार ने कश्मीरी विस्थापितों की घर वापसी के लिए जो योजनाएं बनाई हैं वे भी होमलैंड की तर्ज पर ही हैं जिन्हें सुरक्षित जोनों के रूप में जाना जा रहा है। सनद रहे कि राज्य सरकार चाहती है कि प्रत्येक जिले में कुछ सुरक्षित जोनों का निर्माण कर वहां कश्मीरी पंडितों के विस्थापित परिवारों को वापस लाकर बसाया जाए। कश्मीरी पंडित संगठनों द्वारा मांगे जा रहे होमलैंड तथा इन सुरक्षित जोनों में अंतर सिर्फ इतना है कि ये शायद ही जेहलम दरिया के किनारे नहीं होंगे। कश्मीरी पंडितों का आरोप तो यहां तक है कि भारत सरकार उन लोगों को कभी कुछ भी नहीं देती है जो शांति के पथ पर चलते हुए कुछ मांगते हैं। और उनका कहना था कि हथियार उठाने वालों से तो बिना शर्त बात की भी घोषणा हो जाती है।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

आपसी सहमति या विशेष कानून

देश के ज्वलंत मुद्दों में से एक अयोध्या मुद्दा वैसे तो चुनावों के समय गमार्या जाता रहा है लेकिन यह पहली बार है कि इस बार यह विषय चुनावों के बाद सुर्खियों में आया है। दरअसल उच्चतम न्यायालय ने राम मंदिर मामले में अहम टिप्पणी करते हुए कहा है कि दोनों पक्ष इस मामले को बाहर सुलझाएं क्योंकि यह धर्म और आस्था से जुड़ा मामला है। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि यह एक संवेदनशील और भावनात्मक मुद्दा है और यह बेहतर होगा कि इस मुद्दे को मैत्रीपूर्ण ढंग से सुलझाया जाए। न्यायालय भाजपा नेता सुब्रह्मण्यम स्वामी की उस याचिका पर सुनवाई कर रहा था जिसमें स्वामी ने अयोध्या विवाद पर तत्काल सुनवाई की मांग की है। प्रधान न्यायाधीश जेएस खेहर ने यहां तक कहा है कि यदि संबंधित पक्ष उनकी मध्यस्थता चाहते हैं तो वह इस काम के लिए तैयार हैं। न्यायालय ने स्वामी से संबंधित पक्षों से सलाह करने और इस संदर्भ में लिए गए फैसले के बारे में न्यायालय को ३१ मार्च को सूचित करने को कहा है जब मामले की अगली सुनवाई होगी। बातचीत करने को दोनों पक्ष राजी बताये जा रहे हैं लेकिन पूर्व के अनुभवों को देखते हुए इसका कोई लाभ नहीं होने की भविष्यवाणी भी कर रहे हैं। दूसरी तरफ केंद्र सरकार भी चाह रही है कि यह मसला जल्द से जल्द वार्ता से हल हो जाये तो अच्छा है क्योंकि अगले वर्ष जब राज्यसभा में भी भाजपा के पास बहुमत होगा तो राम मंदिर मुद्दे पर आगे बढ़ने का उस पर दबाव होगा। भाजपा के पास पांच पीछे खींचने होगा क्योंकि संसद के दोनों बहुमत होगा और उत्तर चौथाई बहुमत वाली उसकी पहले भाजपा राज्यसभा में उत्तर प्रदेश में अपनी पार्टी की दुहाई देते हुए अपनी है। भाजपा को पता है कि यदि संसद से कानून बनाकर राम मंदिर बनाया जायेगा तो देश में दो संप्रदायों के बीच मतभेद बढ़ सकता है और हालात खराब हो सकते हैं इसलिए अंदरखाने उसका भी प्रयास है कि राम मंदिर मुद्दा वार्ता से शीघ्र से शीघ्र हल हो जाये। यदि न्यायालय के वार्ता के सुझाव से कोई हल नहीं निकलता है तो इस मामले में रोजाना सुनवाई करने का अदालत से आग्रह किया जा सकता है ताकि जल्द से जल्द हल निकल सके। इस मुद्दे पर बातचीत करने वाले लोगों के तेवर नरम हों सकें इसके लिए भी सरकार के स्तर पर प्रयास होने चाहिए। बातचीत से मुद्दा सुलझाने की संभावनाओं पर गौर करने से पहले जरा अदालत के सुझाव के बाद आई प्रतिक्रियाओं पर गौर करें। अदालत के इस रुख का जहां भाजपा ने स्वागत किया है वहीं बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी ने कहा है कि प्रधान न्यायाधीश की मध्यस्थता में वह संवाद करने को तैयार हैं, लेकिन पूर्व के अनुभवों को देखते हुए इस मामले का हल आपसी बातचीत से होना मुमकिन नहीं है। अयोध्या में पैदा हुए अंसारी ने ही सबसे पहले १९४६ में इस मामले को लेकर अदालत में मुकदमा दायर किया था। वह सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड द्वारा फैजाबाद दीवानी अदालत में दायर अयोध्या मामले के मुकदमे में १९६१ में कुछ अन्य लोगों के साथ प्रमुख वादी बने थे। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने साल २०१० में इस मुकदमे में बहुमत से फैसला सुनाया था। अदालत ने अयोध्या में विवादित स्थल का एक तिहाई हिस्सा निमोर्ही अखाड़े को आवंटित कर दिया था। बाकी का दो तिहाई हिस्सा वक्फ बोर्ड और रामलला का प्रतिनिधित्व करने वाले पक्ष के बीच बराबर बांट दिया गया था। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले के तुरंत बाद अंसारी ने विवाद को दफन करने और नई शुरुआत करने की अपील की थी। अयोध्या विवाद का हल अदालत से बाहर निकालने के अपने प्रयास के तहत अंसारी ने कहा था कि मामले के शांतिपूर्ण समाधान के लिए वह अल्पसंख्यक समुदाय के प्रमुख लोगों को साथ लेंगे। अंसारी ने विवाद के समाधान के लिए नये प्रस्ताव पर चर्चा करने के लिए अखाड़ा परिषद के प्रमुख महंत ज्ञान दास से मुलाकात भी की थी। अदालत के बाहर समाधान का जो फामूला पेश किया गया था उसमें विवादित परिसर के ७० एकड़ में मंदिर और मस्जिद दोनों बनाने तथा फिर दोनों धार्मिक स्थलों के बीच १०० फुट ऊंची दीवार खड़ी करने की बात की गई थी। माना जाता है कि १९६१ में तत्कालीन प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने विश्व हिन्दू परिषद विहिप और बाबरी एक्शन कमेटी के बीच एक सौहार्दपूर्ण हल के लिए बातचीत का प्रयास किया था। लेकिन जब विहिप ने वहां मंदिर होने के सभी सबूत दिये तो बाबरी एक्शन कमेटी ने बैठक छोड़ दी। विहिप का दावा है कि जियोराडार और उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ के तहत एएसआई द्वारा की गई खुदाई से यह पहले ही साबित हो गया है कि बाबरी ढांचे के स्थल पर एक भव्य मंदिर था। उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने स्वीकार किया कि बाबरी ढांचे के स्थल पर मंदिर होने के पर्याप्त सबूत हैं। कथित रूप से मुस्लिम भी इस पर सहमत थे कि विवादास्पद स्थल पर यदि मंदिर अस्तित्व में होगा तो वे अपना दावा वापस ले लेंगे। यदि आज यह मुद्दा सुलझ जाये तो यकीनन देश की एकता और अखण्डता और मजबूत होगी। दो वर्गों के बीच विवाद के इस विषय से आने वाली पीढ़ियों को नहीं जूझना पड़े यह सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी भी है। बहरहाल भाजपा अब इस मुद्दे को लेकर ज्यादा आश्वस्त नजर आ रही है क्योंकि केंद्र के बाद अब उत्तर प्रदेश में भी उसका शासन है। राम मंदिर निर्माण भाजपा के प्रमुख वादों में से एक है। हिन्दू महासभा की मांग है कि या तो आम सहमति से या फिर अदालती फैसले या संसद से कानून बनाकर मंदिर का निर्माण शीघ्र किया जाये। हिन्दू महासभा का विश्वास है कि उच्चतम न्यायालय का निर्णय हिन्दुओं के पक्ष में होगा।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org



राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

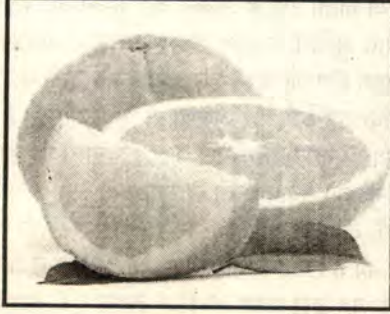
का कोई बहाना नहीं सदन में उसके पास प्रदेश में भी तीन सरकार आ गयी है। बहुमत नहीं होने और की सरकार नहीं होने मजबूरी जताती रही

उत्तम स्वास्थ्य के लिए प्रकृति का वरदान है मौसमी

मौसमी हमारे शरीर के लिए बहुत लाभदायक है। हर बीमारी की कमजोरी को दूर करने के लिए मौसमी बहुत ही अच्छी चीज है। रोगियों के लिए तो यह एक प्राकृतिक वरदान है।

चर्म रोगों के लिए विशेष : हर प्रकार के चर्म रोगों के लिए मौसमी का सेवन करना बहुत लाभदायक रहता है क्योंकि मौसमी का रस खून साफ करने की क्षमता रखता है। इसलिए चर्म रोग से दुःखी लोग दिन में चार बार एक-एक गिलास मौसमी का रस एक मास तक पीते रहें। इससे लाभ होगा।

गर्भवती स्त्रियों के लिए : हर गर्भवती स्त्री के अन्दर कैल्शियम की कमी होती है। गर्भवती नारी के पेट में पल रहे बच्चे को शक्ति की आवश्यकता होती है। वह शक्ति उसे माँ के शरीर से ही मिल पाती है। इसलिए माँ के शरीर में उतनी शक्ति तो रहनी ही चाहिए। ऐसी शक्ति मौसमी के रस में भरपूर होती है। इसलिए गर्भवती नारी को उसके बच्चे के स्वास्थ्य के लिए मौसमी का रस भरपूर मात्रा में देना जरूरी है।



दिल के रोगों के लिए : विज्ञान के बढ़ते चरण मानव जाति को जितने भी ऐशो-आराम दे रहे हैं उससे कहीं अधिक वह रोग पैदा करते जा रहे हैं। दिल के रोग का कारण है कि हमारे शरीर के अन्दर विषैले पदार्थ साँस की नलियों में फँस कर हमारे साँस की गति में बाधा डालते हैं। मौसमी का रस इन विषैले पदार्थों को साँस की नलियों से निकाल देता है जिससे हमारे दिल की सारी नलियाँ साफ हो जाती हैं और हम बिल्कुल ताजा हो जाते हैं।

पुराना बुखार (टाइफाइड) : इस बुखार के उपचार में मौसमी का बहुत बड़ा योगदान है। टाइफाइड के रोगियों को अधिक-से-अधिक मौसमी का रस देना चाहिए। इससे शारीरिक कमजोरी भी दूर हो जाती है क्योंकि उन दिनों अंतर्द्वारों भारी खाने का बोझ उठाने के योग्य ही नहीं होती। इसलिए रोगी को हल्का भोजन देना चाहिए। मौसमी का रस शक्तिशाली भी है और इससे अंतर्द्वारों पर बोझ भी नहीं पड़ता।

दूध-दही खाने से घटता है ब्रेस्ट कैंसर का खतरा

एक नए अध्ययन के मुताबिक डाइट में प्रोबायोटिक से भरपूर खाद्य पदार्थ को शामिल करने से ब्रेस्ट कैंसर का खतरा कम हो जाता है। दूध से दही बनने की प्रक्रिया में एक खास तरह के बैक्टीरिया की भूमिका अहम होती है। महिलाओं के स्तन में भी अच्छे बैक्टीरिया होते हैं, जो उन्हें सेहतमंद रखते हैं। दूध-दही के सेवन से स्तन में बैक्टीरिया की संख्या में वृद्धि होती है। ब्रेस्ट कैंसर से पीड़ित और सेहतमंद दोनों तरह की महिलाओं पर किए गए शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है।

मोटापे से दिमाग पर पड़ता है बुरा असर



मोटापा न सिर्फ आपके शारीरिक स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है, बल्कि यह आपके दिमाग को भी बुरी तरह प्रभावित कर सकता है। हालिया ब्रिटिश शोध में चेताया गया है कि मोटापे के चलते लोगों का दिमाग अपेक्षाकृत 90 साल ज्यादा बूढ़ा हो जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि अगर आपकी उम्र 50 साल है, तो मोटापा की वजह से दिमाग 60 साल के व्यक्ति की तरह काम करेगा।

वैसे तो उम्र बढ़ने के साथ दिमाग के काम करने की क्षमता कम होने लगती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि मोटापे से दिमाग के एक हिस्से (व्हाइट मैटर) पर बुरा असर पड़ता है। यह दिमाग का ऐसा हिस्सा है, जो जानकारी के आदान-प्रदान में अहम भूमिका निभाता है।

हरियाली से टीनएजर बनते हैं खुशमिजाज

किशोरावस्था में मूड स्विंग की समस्या होना आम है। एक नए अध्ययन के मुताबिक ऐसे किशोर जो हरियाली भरे वातावरण के बीच रहते हैं, वे कम गुस्सैल होते हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया के शोधकर्ताओं ने लगभग 6 से 9 व्ष के 9300 टीनएजर्स पर किए गए अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है। शोधकर्ताओं के मुताबिक हरियाली से किशोरों में गुस्से की समस्या 92 प्रतिशत तक कम हो सकती है। यह अध्ययन अमेरिकन एकेडमी ऑफ चाइल्ड एंड एडोलसेंट साइक्रेट्री में प्रकाशित हुआ है।



माँ के दूध से बच्चों का दिमाग तेज

माँ का दूध बच्चों के लिए वरदान होता है। समय से पूर्व जन्मे बच्चों को यह अतिरिक्त मदद देता है। एक शोध के अनुसार समय पूर्व जन्मे बच्चों में माँ का दूध दिमाग के विकास में तेजी से मदद करता है।

डायबिटीज से बचना है तो घर का खाना खाइए

अगर आप मोटापा और टाइप-टू डायबिटीज से बचना चाहते हैं तो घर में बना खाना खाने की आदत डाल लीजिए। हाल के शोध में दावा किया गया है कि जो लोग अक्सर घर में पका खाना खाते हैं उनको टाइप-टू डायबिटीज का जोखिम बेहद कम रहता है। वहीं होटल का खाना खाने और फास्ट फूड से मोटापा और डायबिटीज की चपेट में आने की संभावना ज्यादा रहती है। अमेरिकी शोधकर्ताओं का कहना है कि होटल का खाना और फास्ट फूड जैसे आहार पौष्टिक कम होते हैं, लेकिन उच्च ऊर्जा से युक्त होते हैं। इनके चलते लोगों का वजन बढ़ने लगता है और वे टाइप-टू डायबिटीज के शिकार हो जाते हैं। यह शोध प्लस मेडिसिन जर्नल में प्रकाशित हुआ।

दालचीनी से बच्चों का दिमाग तेज होगा

अगर बच्चा किसी पाठ को मुश्किल से याद कर पाता है। बार-बार चीजों को भूलता रहता है तो घबराने की जरूरत नहीं है। हर रोज उसके नाश्ते में दालचीनी का इस्तेमाल शुरू कर दीजिए। कुछ ही दिनों में वह चीजों को जल्दी याद कर लेगा और लंबे समय तक भूलेगा भी नहीं। एक शोध में दावा किया गया है कि दालचीनी से बच्चों का दिमाग तेज होता है। शिकागो विश्वविद्यालय में भारतवंशी प्रोफेसर द्वारा किए गए शोध में पता चला है कि दालचीनी याददाश्त बढ़ाने में मदद करती है। शोध के दौरान चूहों को दालचीनी खिलाई गई। इसके बाद उनके दिमाग के 'हिप्पोकैप्स' (याददाश्त से संबंधित हिस्सा) में चीजों को याद रखने के लिए जिम्मेदार प्रोटीन सीआरईबी में इजाफा हुआ। दालचीनी के सेवन से जीएबीआरए प्रोटीन तेजी से घटने लगता है। यह चीजों को याद करने में बाधा पहुँचाने वाला प्रोटीन होता है। इस पूरी प्रक्रिया के फलस्वरूप चीजों को आसानी से याद करने में मदद मिलती है।



जैतून के तेल से स्वास्थ्य होगा बेहतर

अगर आप लम्बे समय तक स्वस्थ जीवन जीना चाहते हैं तो मक्खन की बजाय जैतून के तेल का इस्तेमाल करना शुरू कर दीजिए। जामा इंटरनल मेडिसिन जर्नल में प्रकाशित हालिया शोध के मुताबिक संतृप्त वसा युक्त मक्खन और रेड मीट की बजाय असंतृप्त वसा वाले जैतून और सोयाबीन के तेल का इस्तेमाल स्वास्थ्य के लिए ज्यादा फायदेमंद होता है। इस सम्बन्ध में सब तरह से ज्यादा लोगों के खान-पान, स्वास्थ्य और जीवन शैली पर गहन शोध किया गया। अमेरिकी शोधकर्ताओं ने पाया कि संतृप्त वसा वाले मक्खन और रेड मीट का सेवन करने से स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हो जाता है और जल्द मौत आने का खतरा बढ़ जाता है।

ईयर बड से संगीत सुनना खतरनाक

हमेशा ईयर बड लगाकर संगीत सुनने का शौक, असमय सुनने की क्षमता को कमजोर कर सकता है। एक नए शोध अध्ययन के मुताबिक, आजकल के किशोर संगीत सुनने के लिए हर रोज काफी देर तक ईयर बड लगाए रहते हैं। इस कारण वे कानों में लगातार आवाज गूँजने की समस्या (टिनीटिस) से पीड़ित हो रहे हैं, जो जल्द बहरा होने का लक्षण होता है।



टिनीटिस को चेतावनी के रूप में लें : शोधकर्ताओं ने कहा कि टिनीटिस के लक्षणों को बहरेपन की शुरुआती चेतावनी के रूप में लेना चाहिए, क्योंकि इस समस्या का सामना कर रहे युवाओं को बहरेपन का गंभीर खतरा हो सकता है। उन्होंने कहा, टिनीटिस की बड़ी वजह ईयर बड हैं। युवा हर रोज लंबे समय तक ईयर बड के जरिये संगीत सुनते हैं। इसके अलावा नाइट क्लब, डिस्को और रॉक कंसर्ट जैसे शोर-शराबे वाले स्थानों पर जाना भी कान की सेहत के लिए नुकसानदायक है। ब्राजील की साओ पाउलो यूनिवर्सिटी की शोधकर्ता तनिज गांज सानेचेज ने बताया, किशोरों में बड़े पैमाने पर टिनीटिस की समस्या है। इससे उन पर बहरेपन का गंभीर खतरा मंडरा रहा है।

900 किशोरों के कान का हुआ परीक्षण : शोधकर्ताओं ने इस अध्ययन के तहत 99 से 99 साल के 900 किशोरों के कानों का ऑटोस्कोप से परीक्षण

शेष पृष्ठ 11 पर

हिन्दू नूतन वर्ष महत्ता

हमारे नूतन वर्ष का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् चैत्री नवरात्रि की प्रतिपदा से होता है। वर्ष का पहला दिन होने से इसका विशेष महत्त्व है। वर्षारम्भ की यह मंगलदायिनी तिथि समूचे वर्ष के सुख-दुःख का प्रतीक मानी जाती है।

कैसे करें नूतन वर्ष का स्वागत?

इस दिन नवरात्र घट-स्थापन व ध्वजारोहण, तैलाभ्यंग (शरीर में तेल लगाकर), स्नान, पाठ-पूजन आदि अनेक पुण्यदायी व शुभ कार्य किये जाते हैं। इनसे वर्षपर्यंत व्यापक शांति रहती है। मठ-मंदिरों, आश्रमों आदि धार्मिक स्थलों पर, घर-दुकान, गाँव-मुहल्लों तथा शहर के मुख्य प्रवेश द्वारों पर अशोक, आम, पीपल, नीम आदि के बंदनवार बाँध के तथा भगवा झंडा फहराकर नूतन वर्ष का स्वागत किया जाता है। हमारे ऋषि-मुनियों का कहना है कि बंदनवार के नीचे से जो गुजरता है उसकी ऋतु-परिवर्तन से संबंधित रोगों से रक्षा होती है।

नूतन वर्ष के दिन सूर्यादय के समय भगवान सूर्यनारायण को अर्घ्य देकर व शंखध्वनि करे नूतन वर्ष का स्वागत करना चाहिए।

बीते हुए वर्ष में जाने-अनजाने जो गलतियाँ हो गयी हों उनके लिए ईश्वर से क्षमा-याचना करें एवं आने वाले वर्ष में गलतियों से बचकर सन्मार्ग पर चलने, मनुष्य-जीवन के परम लक्ष्य



परमात्मा को पाने का संकल्प लेना चाहिए। 'नूतन वर्ष मंगलमय हो, आनंदमय हो। भारतीय संस्कृति तथा सदगुरु व महापुरुषों के ज्ञान से सभी का जीवन उन्नत हो।' इस प्रकार एक-दूसरे को बधाई संदेश देकर नूतन वर्ष का स्वागत करें।

कैसे हुआ गुड़ी पड़वा का प्रारम्भ
इस दिन मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी ने बलि के अत्याचार से लोगों को मुक्त किया था। उसकी खुशी में लोगों ने

घर-घर गुड़ी (ध्वजा) खड़ी कर उत्सव मनाया इसलिए यह दिन 'गुड़ी पड़वा' नाम से प्रचलित हुआ। ब्रह्माजी ने जब सृष्टि का आरम्भ किया उस समय इस तिथि को 'प्रवरा' (सर्वोत्तम) तिथि सूचित किया था। इसमें व्यावहारिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि अधिक महत्त्व के अनेक कार्य आरम्भ किये जाते हैं। नये साल के प्रथम दिन से ही चैत्री नवरात्र का उपवास चालू हो जाता है। ६ दिन का उपवास करके माँ शक्ति की उपासना की जाती है, जिससे आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ मानसिक प्रसन्नता व शारीरिक स्वास्थ्य-लाभ भी सहज में ही मिल जाता है।

क्यों करते हैं नीम का सेवन?

चैत्र माह से गर्मी का प्रारम्भ हो जाता है, जिससे ऋतुजन्य बीमारियों जैसे-फोड़े-फुंसी, घमौरी

तथा अन्य चर्मरोगों आदि से बचाव के लिए नीम का सेवन उपयोगी होता है। इस दिन स्वास्थ्य-सुरक्षा तथा चंचल मन की स्थिरता के लिए नीम की पत्तियों को मिश्री, काली मिर्च, अजवायन आदि के साथ प्रसादरूप में लेने का विधान है।

तात्त्विक दृष्टि से देखें तो हमारे जीवन-व्यवहार में कड़वे घूँट पीने के भी अवसर आते रहते हैं अतः नीम का सेवन करते समय मानसिक तैयारी कर लेनी चाहिए कि 'इस वर्ष प्रारब्धवश जो भी दुःख, मुसीबत, प्रतिकूलता, अपमान आदि के कड़वे घूँट पीने पड़ेंगे, उन्हें मैं प्रभु की कृपा समझकर पचा जाऊँगा। उस कड़वाहट को भी स्वास्थ्य का साधन बनाऊँगा। विघ्न-बाधा, दुःख की परिस्थितियों को भी 'स्व' में स्थित होने हेतु समता के अभ्यास का साधन बनाऊँगा। शरीर को 'मैं' व मन-बुद्धि के दोषों को अपने में न आरोपित करके साक्षी चैतन्य में टिकने का प्रयास करूँगा।'

मधुमय परमात्मा से करें प्रार्थना

आज समाज में भोगवादिता व पाश्चात्य विचारधारा का प्रभुत्व बढ़ा है। इस दिन हमें अपने देश, धर्म व संस्कृति के प्रति अपना दायित्व निभाने तथा नैतिक और

सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए कटिबद्ध होना है। यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि जिस प्रकार प्रभु श्रीरामचन्द्रजी ने बालि पर विजय प्राप्त की तथा शालिवाहन ने शकों को पराजित किया, उसी प्रकार हमें अपनी निंदा, ईर्ष्या, काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग-द्वेष आदि आसुरी वृत्तियों पर विजय प्राप्त करनी है। इस दिन परमात्मा से प्रार्थना करें कि 'हमारा जीवन मधुमय हो, हमारा व्यवहार व वाणी मधुमय हो, हमारी प्रत्येक चेष्टा मधुमय ईश्वर की ओर ले जाने वाली हो।'

'अथर्ववेद' (१.३४.२) में आता है **जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्।**

ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि।।

'मेरी जिह्वा के अग्रभाग में माधुर्य हो। मेरी जिह्वा के मूल में मधुरता हो। मेरे कर्म में माधुर्य का निवास हो और हे माधुर्य! मेरे हृदय तक पहुँचो।' इस पवित्र मांगलिक दिन हमें यह शुभ संकल्प करना है और 'इसे पूर्ण करने का सामर्थ्य प्रभु हमें दे'—इस भावना से नूतन वर्ष के मंगलमय अवसर को उत्साह से मनाना है।

साभार-ऋषि प्रसाद

शहीद

धरा पर तिरंगा लिपटा शेर मेरा
सिर मेरा फर्क से ऊँचा हुआ आज मेरा।
यू तो मरते हैं ना जाने रोज लोग कितने
पर भाग्यशाली ही वीर गति को प्राप्त हुआ करते हैं।
सच है मैं जननी हूँ तेरी पर मैं आज तुझे नमन करती हूँ।
दूध का कर्ज को चुका दिया तूने
इस पर आज मैं अभिमान करती हूँ।
दीपक बन कुन का नाम रोशन कर दिया
भारत माँ का सच्चा प्रहरी बन कर दिख ला दिया
सौभाग्य है ये मेरा लाल बना जो तू मेरा।
पीयूष अरोड़ा, चान्दपुर

जागो और जगाओ!

देखिए तो, इनके बारे में, पाँचों विधानसभाओं के चुनावों में, मृत प्रायः हिन्दुओं ने, कुछ भी तो नहीं कहा है:-

१. पंजाब के अमृतसर में, दुर्गयाना मन्दिर और किसी बड़ी आर्य समाज का भी सौन्दर्यकरण क्यों नहीं किया गया है?
२. देश का क्षेत्रफल २-१/२ प्रतिशत है और जनसंख्या १६-१/२ प्रतिशत है फिर भी अनिवार्य परिवार नियोजन क्यों नहीं लागू किया जाता है?
३. अन्य देशों में, अल्पसंख्यक, देश का राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री नहीं बन सकता है वह पार्टी का अध्यक्ष अथवा महामन्त्री भी नहीं बन सकता है फिर ऐसा प्रतिबन्ध भारत में क्यों नहीं है?
४. नोट बन्दी के समय लाइनों में खड़े लोगों में १५० व्यक्ति मरे जिनमें १४ उत्तर प्रदेश के थे। इन चौदहों को तो सपा सरकार ने दो-दो लाख रुपए दे दिए जबकि शेष १३६ व्यक्तियों को मुआवजा दिलवाने की व्यवस्था मोदी सरकार ने क्यों नहीं की?
५. कांग्रेस के नेता, हिन्दू-मुस्लिम एकता में, असफल रहे तभी तो १९४७ में विभाजन हुआ फिर भी नेहरू-गाँधी के अनुयायी उसी मार्ग में क्यों चल रहे हैं? जनता उन का साथ क्यों दे रही है? इतिहास को पुनः दोहराने की कोशिश क्यों की जा रही है?
६. सरकारी करन्सी के नोटों पर गाँधी की फोटो ६६ वर्षों से लगातार क्यों छापी जा रही है? जबकि वे किसी पद पर नहीं रहे और असफल नेता सिद्ध हुए।
७. हमारा सुझाव है कि करन्सी नोटों पर पूर्व राष्ट्रपतियों की फोटो छापनी शुरू की जाए।
८. वीर सावरकर ने कहा था कि मुस्लिम-हिन्दू एकता उचित हो सकती है न कि हिन्दू-मुस्लिम एकता।

आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

कश्मीर समस्या के समाधान हेतु सुझाव

प्रतिक्रिया

१. कांग्रेस ने घोषित कर दिया, कि वह समुदाय अल्पसंख्यक माना जाएगा जिसे भारत सरकार अल्पसंख्यक घोषित करेगी।
२. भारत सरकार ने मुस्लिम-ईसाई-सिख-बौद्ध-जैन-पारसी समुदाय को अखिल भारतीय स्तर पर अल्पसंख्यक घोषित किया है।
३. तथा कथित हिन्दू-हृदय-सम्राट अटल बिहारी बाजपेयी पे १९७८ में, जिस अल्पसंख्यक आयोग का गठन किया था उसमें भी उपरोक्त छह समुदायों के हितों की रक्षा का प्रावधान है।
४. कांग्रेसी संस्कृति के अनुसार छह राज्यों में हिन्दू अल्पसंख्यक हैं किन्तु इन्हें सरकार की मान्यता नहीं है।
५. बाजपेयी द्वारा निर्मित अल्पसंख्यक आयोग को भी, इन छह राज्यों के, अभागे हिन्दुओं की शिकायतों को सुनने और उनके हितों की रक्षा करने का कोई अधिकार ही नहीं है।
६. खंडित भारत के २३ राज्यों में हिन्दू बेशक बहुसंख्यक हैं किन्तु इन्हें सरकारी मान्यता नहीं दी गई है। ये तो लावारिस की भाँति हैं जिनकी रक्षा करने में कोई सरकार दिलचस्पी नहीं लेती है क्योंकि इनका वोट बैंक नहीं है। जातियों में बंटे हुए हैं और आपस में लड़ते रहते हैं।

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

तवलीन सिंह जानी मानी लेखिका है। २६ फरवरी, २०१७ के अमर उजाला समाचार पत्र में आप पाकिस्तान की दरगाह में हुआ आतंकवादी हमले के विषय में लिखती है।

सिंध में पिछले दिनों जब शहबाज कलंदर की दरगाह पर आत्मघाती हमला हुआ, तो उस हमले के खिलाफ भारत से बहुत कम आवाजें सुनाई पड़ीं। उल्टे पाकिस्तान से ज्यादा आवाजें सुनाई पड़ीं कि इस्लाम का यह सूफियाना रूप उनकी विरासत है। सूफियाना इस्लाम भारत के सनातन धर्म से प्रेरणा लेकर पैदा हुआ। सूफियाना इस्लाम भारत की भी विरासत है और इसे सुरक्षित रखना आज और भी ज्यादा जरूरी हो गया है, क्योंकि वहाबी इस्लाम का हिंसक, जेहादी रूप देख कई देश इस्लाम के खिलाफ हो गए हैं। सो अगर हम यह दिखा सकें कि सूफियाना इस्लाम की वजह से भारत में सदियों से हिंदू-मुस्लिम शांति-प्यार से रह रहे हैं, तो हो सकता है कि इस्लाम को लोग नई नजरों से देखने लगें।

तवलीन सिंह कि सूफियों के विषय में दी गई राय एकतरफा है। प्रायः हिन्दू समाज में भी यही माना जाता है कि हिंदुस्तान में जितने भी मुसलमान सूफी, फकीर और पीर आदि हुए हैं, वे सभी उदारवादी थे। हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। वे भारतीय दर्शन और ध्यान योग की उपज थे। मगर यह एक भ्रान्ति है। भारत देश पर इस्लामिक आक्रमण दो रूपों में हुआ था। प्रथम इस्लामिक आक्रमणकर्ताओं द्वारा एक हाथ में तलवार और एक में कुरान लेकर भारत के शरीर और आत्मा पर जख्म पर जख्म बनाते चले गए। दूसरा सूफियों द्वारा मुख में भजन, कीर्तन, चमत्कार के दावे और बगल में कुरान दबाये हुए पीड़ित भारतीयों के जख्मों पर मरहम लगाने के बहाने इस्लाम में दीक्षित करना था। सूफियों को इस्लाम में दीक्षित करने वाली संस्था कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस लेख में हम ऐतिहासिक प्रमाणों के माध्यम से यह जानेंगे कि सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण किस प्रकार किया गया।

सूफियों के कारनामों

हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर उन्हें मुसलमान बनाने के लिए सूफियों ने साम-दाम, दंड-भेद



साफ मना किया। शेख ने कहा इस्लाम के बन्दों पर कोई काफिर हुकुम जारी न कर सके। ऐसी व्यवस्था करे। इस्लाम, हदीस आदि में ऐसे स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं। ३. मीर सैय्यद अली हमदानी द्वारा कश्मीर के सुल्तान को हिन्दुओं के सम्बन्ध में राजाज्ञा लागु करने का परामर्श दिया गया था। इस परामर्श में हिन्दुओं के साथ कैसा बर्ताव करे। यह बताया गया था। -हिन्दुओं को नए मंदिर बनाने

खरीदने की इजाजत न हो।

मेरे विचार से इससे आगे कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं है।

४. सूफी शाह वलीउल्लाह द्वारा दिल्ली के सुल्तान अहमद शाह को हिन्दुओं को उनके त्योहार बनाने से मना किया गया। उन्हें होली बनाने और गंगा स्नान करने से रोका जाये। सुन्नी फिरके से सम्बंधित होने के कारण सूफी शाह वलीउल्लाह द्वारा शिया फिरके

सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण

डॉ० विवेक आर्य

की नीति से लेकर तलवार उठाने तक सभी नैतिक और अनैतिक तरीकों का भरपूर प्रयोग किया।

१. शाहजहाँ की मुल्ला मुहीबीब अली सिन्धी नामक सूफी आलिम से अभिन्नता थी। शाहजहाँ ने इस सूफी संत को हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित करने की आज्ञा दी।

२. सूफी कादरिया खानकाह के शेख दाऊद और उनके शिष्य शाह अब्दुल माली के विषय में कहा जाता है कि वे ५० से १०० हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित करते थे।

३. सूफी शेख अब्दुल अजीज द्वारा अनेक हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित किया गया।

४. सूफी मीरान भीख के जीवन का एक प्रसंग मिलता है। एक हिन्दू जमींदार बीरबर को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई। उसने सूफी मीरान भीख से सजा माफी की गुहार लगाई। सूफी ने इस्लाम कबूल करने की शर्त लगाई। हिन्दू बीरबर मुसलमान बन गया। सूफी ने इस्लाम की सेवा में उसे रख लिया।

५. दारा शिकोह के अनुसार सूफी शेख अब्दुल कादिर द्वारा अनेक हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया।

६. मीर सैय्यद अली हमदानी द्वारा कश्मीर का बड़े पैमाने पर इस्लामीकरण किया गया। श्रीनगर के काली मंदिर को तोड़कर उसने अपनी खानकाह स्थापित करी

थी। हिन्दू ब्राह्मणों को छलने के लिए हमदानी के शिष्य नूरुद्दीन ने नुंद ऋषि के नाम से अपने को प्रसिद्ध कर लिया। नूरुद्दीन ने श्रीनगर की प्रसिद्ध हिन्दू उपासक लाल देह के हिन्दू रंग में अपने को पहले रंग लिया। फिर उसके उपासकों को प्रभावित कर इस्लाम में दीक्षित कर दिया। उसके मुख्य शिष्यों के नाम बामुद्दीन, जैनुद्दीन, लतीफुद्दीन आदि रख दिया। ये सभी जन्म से ब्राह्मण थे।

सूफियों द्वारा इस्लाम की सेवा करने के लिए मुस्लिम शासकों को हिन्दुओं पर अत्याचार करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। जिससे हिन्दू तंग आकर इस्लाम ग्रहण कर ले।

१. अलतमश द्वारा नियुक्त सुहरावर्दी खलीफा सैय्यद नूरुद्दीन मुबारक ने इस्लाम की सेवा के लिए

- शरिया लागु करना।

- मूर्तिपूजा और बहुदेवतावाद को कुप्र घोषित करना।

- मूर्तिपूजक हिन्दुओं को प्रताड़ित करना।

- हिन्दुओं विशेष रूप से ब्राह्मणों को दंड देना।

- किसी भी उच्च पद पर किसी भी हिन्दू को न आसीन करना।

२. बंगाल के सुल्तान गियासुद्दीन आजम को फिरदवासीया सूफी शेख मुज्जफर ने पत्र लिख कर किसी भी काफिर को किसी भी सरकारी उच्च पद पर रखने से

की कोई इजाजत न हो।

- हिन्दुओं को पुराने मंदिर की मरम्मत की कोई इजाजत न हो।

- मुसलमान यात्रियों को हिन्दू मंदिरों में रुकने की इजाजत हो।

- मुसलमान यात्रियों को हिन्दू अपने घर में कम से कम तीन दिन रुकवा कर उनकी सेवा करे।

- हिन्दुओं को जासूसी करने और जासूसों को अपने घर में रुकवाने का कोई अधिकार न हो।

- कोई हिन्दू इस्लाम ग्रहण करना चाहे तो उसे कोई रोकटोक न हो।

- हिन्दू मुसलमानों को सम्मान दे एवं अपने विवाह में आने का उन्हें निमंत्रण दे।

- हिन्दुओं को मुसलमानों जैसे वस्त्र पहनने और नाम रखने की इजाजत न हो।

- हिन्दुओं को काठी वाले घोड़े और अस्त्र-शस्त्र रखने की इजाजत न हो।

- हिन्दुओं को रत्न जड़ित अंगूठी पहनने का अधिकार न हो।

- हिन्दुओं को मुस्लिम बस्ती में मकान बनाने की इजाजत न हो।

- हिन्दुओं को मुस्लिम कब्रिस्तान के नजदीक से शव यात्र लेकर जाने और मुसलमानों के कब्रिस्तान में शव गाड़ने की इजाजत न हो।

- हिन्दुओं को ऊँची आवाज में मृत्यु पर विलाप करने की इजाजत न हो।

- हिन्दुओं को मुस्लिम गुलाम

पर पाबन्दी लगाने की सलाह दी गई। शिया मुसलमानों को ताजिये निकालने और छाती पीटने पर पाबन्दी लगाने की सलाह दी गई।

५. मीर मुहम्मद सूफी और सुहा भट्ट की सलाह पर कश्मीर के सुल्तान सिकंदर ने अनंतनाग, मार्तण्ड, सोपुर और बरामुला के प्राचीन हिन्दुओं के मंदिरों को नष्ट कर दिया। हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया गया। कश्मीरी हिन्दू ब्राह्मणों को सरकारी पदों से हटाकर ईरान से मौलवियों को बुलाकर बैठा दिया गया।

सूफियों द्वारा हिन्दू मंदिरों का विनाश।

इतिहास में अनेक उदहारण मिलते हैं जब सूफियों ने अनेक हिन्दू मंदिरों का स्वयं विध्वंस किया अथवा मुस्लिम शासकों को ऐसा करने की प्रेरणा दी।

१. सूफी मियां बयान अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के समीप रहता था। गुजरात से बहादुर शाह जब अजमेर आया तो सूफी मियां उससे मिले। उस समय राजगद्दी को लेकर गुजरात में अनेक मतभेद चल रहे थे। मियां ने बहादुर शाह की खूब आवभगत करी और उसे अजमेर को राजपूत काफिरों से मुक्त करने की गुजारिश करी। बाद में शासक बनने पर बहादुर शाह ने

शेष पृष्ठ 10 पर

यह तो आम जानकारी की बात है कि पेप्सी और कोका-कोला के तरह-तरह के प्रचार माध्यमों के कारण इसका प्रचलन इतना बढ़ गया है कि इसका सेवन हर मौके और प्रत्येक मौसम में गरीब-अमीर सभी करने लग गये हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार यह मान लें कि देश की आधी जनसंख्या इसका सेवन करती है और प्रत्येक व्यक्ति वर्ष भर में 90 बोतल पीये तो प्रतिवर्ष 450 करोड़ बोतलों की खपत हुई। एक बोतल

दो वर्ष में लगभग 20-40 अरब रुपये आम नागरिक की जेब से निकलकर विदेश में चले गए। हमारे देश में 6 लाख से अधिक गाँव हैं। पेप्सी और कोका-कोला के चक्कर में दो साल में हमारी जेब से निकला पैसा इतना है कि प्रत्येक गाँव के हिस्से में लगभग डेढ़ लाख रुपये आया जिससे प्रत्येक गाँव में पीने का पानी का प्रबन्ध किया जा सकता है। इतना बड़ा व्यापार है इस 300 मिली. की बोतल का।

बनाना है। पेप्सी, कोका-कोला के व्यापार ने हमारे छोटे धन्धों जैसे-गन्ने का रस, नींबू की शिकंजी, फलों का रस, जलजीरा, शरबत और नारियल के पानी आदि से अपना पेट पालनेवाले लाखों लोगों के पेट पर लात मारकर बाजार पर कब्जा जमा लिया। बाजार के अतिरिक्त लोगों की आदतों और सोच पर अधिकार हो जाता है तो वह देश चुपचाप अनजाने में गुलाम बन जाता है।

ये कुछ बातें थीं जो देश के स्वास्थ्य से जुड़ी हैं। अब विचार करें कि पेप्सी, कोका-कोला (थम्स-अप), लिम्बका, लहर-पेप्सी, मिरिण्डा आदि सभी ब्राण्ड जब हमारे पेट में जाते हैं तो हमारे स्वास्थ्य के साथ क्या करते हैं जरा ध्यान से पढ़िये—

तो प्रतिदिन 93-98 चम्मच चीनी पेट में चली जाती है जो शुगर की बीमारी को बढ़ावा देती है। 8. इन शीतल पेय-पदार्थों का स्वाद चरपरा बनाने के लिए इनमें फास्फोरिक व सिट्रिक अम्ल मिलाये जाते हैं। किसी तरल में कितना तेजाब है इसका अंदाजा पी.एच. मापकर किया जाता है। पानी जो कि उदासीन है (न अम्ल न क्षार) की पी.एच. 7 होती है। 9 से कम पी.एच. वाले तरल अम्लीय



पर सब खर्च मिलाकर लगभग 2 रुपये से भी कम लागत आती है और ग्राहक की जेब से 90 रुपये निकाल लिए जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक बोतल के पीछे लगभग 2 रुपये आम भारतीय की जेब से निकलकर बहुराष्ट्रीय कम्पनी के खाते में चले गये। इस हिसाब से

आज किसी भी देश को हथियारों के बूते अधीन नहीं किया जा सकता। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर बनाकर अपने अधीन कर लेना उस देश को गुलाम बना लेना है। आज का सबसे कारगर हथियार व्यापार के माध्यम से अर्थव्यवस्था को पंगु

पेप्सी-कोक शीतल पेय या घातक षड्यंत्र

चांद सिंह आर्य

यही वह गहरी राजनीति है जो पेप्सी-कोक देश में चला रही है। प्रतिवर्ष देश का जो अरबों रुपया बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कमाती हैं उसी में से एक भाग विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के माध्यम से हमारे देश में मनचाही शर्तों पर हमारे सिर कर्ज बनकर आता है। हमारा पैसा हमें ही कर्ज और वह भी मनमानी शर्तों पर अर्थात् हमारा जूता हमारे सिर। इससे गहरा षड्यंत्र और क्या होगा?

सभी शीतल पेय पदार्थों में जो विभिन्न रंग मिले हैं वे सब कृत्रिम रंग हैं। ये वही रंग हैं जो मिठाइयों को रंगीन करने में प्रयोग होते हैं। ये हल्दी, मेंहदी या किसी जड़ी-बूटी के प्राकृतिक रंग नहीं हैं। ये कृत्रिम हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

2. बोतल का ढक्कन खोलते ही बुलबुले उठते हैं। ये बुलबुले उच्च दबाव पर घोली गई कार्बन डाईऑक्साइड के हैं। यह गैस हम श्वास के साथ बाहर छोड़ते हैं क्योंकि शरीर को इस गैस की आवश्यकता नहीं है। पेप्सी और कोका-कोला के सेवन करने वाले इस गैस को शरीर में डालते हैं जो किसी भी रूप में ठीक नहीं है।

3. जब इसकी घूंट भरते हैं तो यह शीतल पेय हमें मीठा सा लगता है। यह मीठी चीनी के कारण नहीं होता अपितु सैक्रीन या एम्परटेम के कारण होता है। ये रसायन चीनी से लगभग सैकड़ों गुणा मीठे होने के कारण बहुत थोड़ी मात्रा से मीठा कर देते हैं और खर्च भी कम आता है। चीनी या गुड़-शक्कर आदि दूसरे मीठे पदार्थों की तरह ये रसायन विघटित न होकर गुर्दों के रास्ते पेशाब के साथ बाहर निकल जाते हैं। अतः इन शीतल पेय पदार्थों का पीना गुर्दों का कार्य बढ़ाना हुआ। यदि चीनी से भी मीठा किया हो तो एक बोतल को मीठा करने के लिए कई चम्मच चीनी मिलानी पड़ती है। कोई व्यक्ति यदि प्रतिदिन एक बोतल पेप्सी पीवे और 3-4 कप चाय भी ले

और 9 से ज्यादा पी.एच. वाले क्षार होते हैं। पेप्सी-कोक की पी.एच. 3.8 के करीब होती है। शौचालयों की सीट साफ करने के प्रयोग में आने वाले नमक के तेजाब की पी.एच. भी 3.8 के आसपास होती है। इस प्रकार पेप्सी, कोका-कोला आदि बहुत ही अम्लीय तरल हैं। फास्फोरिक अम्ल पेट में खरोच कर अल्सर पैदा करता है और हड्डियों को घोलकर उन्हें कमजोर करता है। पेट के स्वाभाविक नमक के तेजाब की क्रिया को मन्द कर देता है जिससे पाचन गड़बड़ा जाता है।

4. इन पेय-पदार्थों को फैक्ट्री में बनाने और ग्राहक के हाथ में आने में कम से कम 9-12 महीने या इससे ज्यादा समय लग जाता है। इतने लम्बे समय तक रखने के कारण खराब होने से बचाने के लिए इनमें परिजरवेटिव (सोडियम बेंजोयेट) मिलाते हैं। जितने भी परिजरवेटिव हैं वे सब स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। 6. कम्पनी का उद्देश्य जन साधारण का स्वास्थ्य न होकर मुनाफा कमाना है। ज्यादा मुनाफे के लिए ज्यादा बिक्री होनी चाहिए। ऐसा तब होगा जब लोग इसके शौकीन बनेंगे और इसके पीने के आदी होंगे। लोगों में इन शीतल पेय-पदार्थों की लत लग जावे इसके लिए इनमें हल्का नशा (कैफीन) मिलाया जाता है। यही कारण है कि आजकल बच्चे दूध, लस्सी के मुकाबले पेप्सी और कोका-कोला को ज्यादा पीते हैं जिससे बच्चों के दाँत खराब हो रहे हैं।

योगी आदित्यनाथ की जीवन और लोकसभा दोनों में है, दमदार परफॉर्मेंस

गोरख नाथ पीठ के महंत, से सांसद और अब उत्तर प्रदेश की सत्ता के शीर्ष पर पहुंचे योगी आदित्यनाथ सिर्फ 8 घंटे सोते हैं और दिनभर में कई बार पूजा करने के अलावा ध्यान भी लगाते हैं। गोरखनाथ मंदिर के 6 पुजारियों ने 5 कालिदास मार्ग पर 6 घंटे तक रुद्राक्ष पूजा की। इसका मकसद इस बंगले को शुद्ध करना था। यह मशक्कत योगी आदित्यनाथ को यूपी सीएम की कुर्सी पर सुरक्षित रखने के इरादे से की जा रही है। अब वह अपने बयानों को लेकर संयम बरत रहे हैं। हालांकि, संसद ने अपना एक सक्रिय और कुशल वक्ता सदस्य खो दिया है। लोकसभा में भी योगी जी की परफॉर्मेंस काबिले तारीफ ही रही है उन्होंने लोकसभा में 208 सवाल पूछे, जो सांसदों के औसतन 90 सवाल के आंकड़ों से काफी ज्यादा है। साथ ही, उन्होंने दूसरों से ज्यादा यानी 56 बहसों में हिस्सा लिया। संसद में उनकी उपस्थिति औसत से थोड़ी कम यानी 97 फीसदी है। हालांकि, सदन में उनकी मुखरता ने इसकी भरपाई कर दी। पिछले नवंबर में समान नागरिक संहिता पर बहस में आदित्यनाथ ने कहा कि 2099 की जनगणना के आंकड़े सदमे में डालने वाले हैं, क्योंकि इसमें हिंदुओं की ग्रोथ में गिरावट हो रही है, जबकि मुसलमानों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। उन्होंने कहा था, कोई भी संप्रभु राष्ट्र इस खतरनाक असंतुलन पर चुप नहीं रह सकता, लेकिन भारत चुप है। उनका यह भी कहना था कि किसी भी देश का भविष्य उसकी बहुसंख्यक आबादी से तय होता है। उन्होंने कहा था, जब बहुसंख्यक आबादी का वजूद खतरे में हो, तो यह न सिर्फ देश की एकता और अखंडता के लिए खतरनाक है, बल्कि लोकतंत्र भी जोखिम में पड़ जाता है।

योगी आदित्यनाथ और पीएम मोदी के खिलाफ पाकिस्तानी चैनलों और अखबारों में फैलाया जा रहा है झूठ।

योगी आदित्यनाथ के उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री बनने की खबर भारत समेत पाकिस्तान में भी सुर्खियां बटौर रही है। पाकिस्तानी चैनल और अखबार में योगी आदित्यनाथ और पीएम मोदी के खिलाफ कई तरह की बातें कही गई हैं। एक चैनल शो के दौरान एक वक्ता कह रहे हैं कि उनके अनुसार पीएम मोदी ने नारा दिया है कि तुम 65 प्रतिशत हिंदू हो और बाकि जो मुसलमान है वो कचरा है। इसके बाद उन्होंने कहा कि हिंदूइस्म और धर्मनिरपेक्षता दोनों अलग चीजें हैं इनमें से कोई एक अब रहेगा। इसके बाद शो में योगी आदित्यनाथ को लेकर कही गई कई आपत्तिजनक बातें। साथ ही हिंदुओं को लेकर भी कई तरह की बातें की गई। शो में नवाज शरीफ के सेक्यूलर मॉडल की भी खूब आलोचना की गई। जो बातें उन्होंने योगी आदित्यनाथ के बारे में बताई गई उससे पता चलता है उन्हें बेहद कम जानकारी है। इसलिए कई तरह झूठी बातें कही गई। इस तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से पाकिस्तानी जनता को भारत के खिलाफ भड़काने के साथ-साथ भारत को मुस्लिम विरोधी साबित करने की कौशिश की जा रही है जोकि कही न कही प्रधानमंत्री मोदी और नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री की छवी को धुमिल करने की सीधे तौर पर साजिश मानी जा सकती है।

ललित मैनी

शेष पृष्ठ 11 पर

(पिछले अंक का शेष)

हिन्दू सैनिकों को मुसलमानों द्वारा किये गये अत्याचारों का पता था, अतः वे भी क्रोध में आकर मुसलमानों को लूटने लगे। जब वे कश्मीर में इस्लामीकरण के पुरोध शाह हमदान की कब्र तोड़ने लगे तो उन्हीं वीरबल धर ने अपनी सदगुण विकृति के कारण उन्हें रोक दिया, जिनके सैकड़ों पुरखे और रिश्तेदार मारे और धर्मान्तरित किये गये थे।

राजा रणजीत सिंह के देहान्त के बाद सिख सरदारों के आपसी संघर्ष के कारण पंजाब पर सिखों की पकड़ ढीली पड़ गयी। इधर अंग्रेजों का प्रभाव लगातार बढ़ रहा था। ऐसे में जम्मू के राजा गुलाब सिंह ने ७५ लाख रुपये अंग्रेजों को देकर पूरा जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख अपने आधीन कर लिया। राजा गुलाब सिंह के समय में हिन्दू मंदिरों एवं तीर्थों का पुनरुद्धार हुआ। हिन्दुओं का मान-सम्मान फिर से बढ़ने लगा। गुलाब सिंह के पुत्र राजा रणवीर सिंह का कार्यकाल १८५७ से १८८५ ई० तक रहा। उनके समय का एक प्रसंग यहाँ उल्लेखनीय है— पुंछ, राजौरी और श्रीनगर क्षेत्र के अनेक प्रमुख मुसलमानों ने उनके पास आकर निवेदन किया कि उन्हें फिर से हिन्दू बनने की अनुमति दी जाए। उन्होंने बताया कि उनके पुरखे अपनी जान तथा बहू-बेटियों की लाज बचाने के लिए मजबूरी में मुसलमान बने थे, पर अन्तर्मन से वे हिन्दू ही रहे। उनके घरों में अनेक ताम्रपत्र सुरक्षित थे, जिन पर उनके पूर्वजों ने यह व्यथा-कथा लिखते हुए अपने वंशजों को निर्देश दिया था कि इस अत्याचारी मुस्लिम राज्य की समाप्ति और हिन्दू राज्य की स्थापना के बाद वे फिर से हिन्दू बन जायें। ऐसे अनेक ताम्रपत्र लेकर वे राजा रणवीर सिंह के पास आये थे।

राजा को इससे बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने अपने राज्य के पण्डितों से बात की पर हिन्दुओं और देश के दुर्भाग्य ने यहाँ भी पीछा नहीं छोड़ा। सरकारी सुख-सुविधाओं की मलाई खा रहे उन पण्डितों ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। उन्होंने कहा, 'महाराज, जैसे दही को फिर से दूध नहीं बनाया जा सकता, ऐसे ही एक बार मुसलमान बन चुका व्यक्ति फिर हिन्दू नहीं हो सकता।'।

इस पर राजा ने कठोर होकर कहा कि यदि तुम परावर्तन नहीं कराओगे तो मैं काशी से विद्वानों को बुलाकर यह काम कराऊँगा। इस पर उन पण्डितों ने राजा को धमकी देते हुए कहा यदि आपने ऐसा किया तो हम सब डल झील में कूदकर प्राण त्याग देंगे और इस ब्रह्महत्या का पाप आपको तथा आपकी भावी पीढ़ियों को लगेगा।

राजा रणवीर सिंह धर्मप्रेमी तो थे, पर धर्मभीरु भी थे। भयभीत होकर उन्होंने हिन्दू बनने के इच्छुक उन मुसलमानों को बैरंग वापस लौटा दिया। काश!

के पश्चिम में उत्तर से दक्षिण तक पंजाब, सिंध, मुल्तान, पेशावर तथा सीमाप्रान्त का संमस्त क्षेत्र और जम्मू-कश्मीर शक्तिशाली सिख महाराजा रणजीत सिंह के आधीन था और शेष भारत ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत। अफगानिस्तान भी एक तरह से रणजीत सिंह को 'कर' देता था। यह समस्त भारत का ऐसा क्षेत्र था जो पहले मुसलमानों के आधीन था पर जिसे महाराजा रणजीत सिंह ने उनसे छीन लिया था। पठानों को बहुत दुख था कि लाहौर उनके हाथ से निकल गया और एक संधि के अन्तर्गत (जो अफगान शासक और रणजीत सिंह के मध्य हुई) पठानों को लाहौर

उतरवा कर दरबार में खोजों से तलाशी करवाई और अन्दरूनी वस्त्रों में छिपाए हुए सब हारे-जवाहरात जब्त कर लिये। दूसरी ओर अंग्रेज भी महाराजा रणजीत सिंह की शक्ति से परिचित थे और उनसे किसी भी तरह की शत्रुता मोल लेना नहीं चाहते थे।

भारत की राजनीति पर इस तरह १८२२ ई० में दो शक्तियाँ अधिकार में थी— एक अंग्रेज थे और दूसरे सिख। इन दोनों ने ही अपने बहुत कुछ इलाके मुस्लिम शासकों से छीने थे और इस कारण मुसलमान स्वयं को बहुत अपमानित एवं पराजित महसूस कर रहे थे।

थी तथा उन्हें प्रतिदिन आधा सेर जौ का आटा भी दिया जाता था। राजधानी दिल्ली की व्यवस्था मराठों ने अपने तरीके से की। मराठों ने मध्य दिल्ली में अपनी मुख्य 'चावड़ी' (कोतवाली) बनाई और वह स्थान आज 'चावड़ी बाजार' (कोतवाली बाजार) के नाम से प्रसिद्ध है। मराठों की दिल्ली पर भगवा झंडा फहराने की एक शताब्दी की इच्छा पूरी हुई, जिसके लिये उन्होंने मुगलों से इतना लम्बा युद्ध लड़ा था। परन्तु मात्र ५ वर्ष पश्चात् ही १८०३ ई० में मराठे पटपड़गंज की लड़ाई में अंग्रेजों से हार गये। इस तरह वास्तव में दिल्ली और भारत की

जम्मू-कश्मीर

इतिहास पुनर्लेखन, गलत फतवा और वहाबी जिहाद

सावधान! तेरा राष्ट्र कभी अवनत न हो।

प्रो० ए०पी० सारस्वत

राजा उन मूर्ख पंडितों के हाथ-पैर बाधकर स्वयं ही डल झील में फेंक देता तो आज कश्मीर की

पर से सदा के लिये अपना हक छोड़ना पड़ा। अफगान शासकों और पठानों के लिये शायद यह

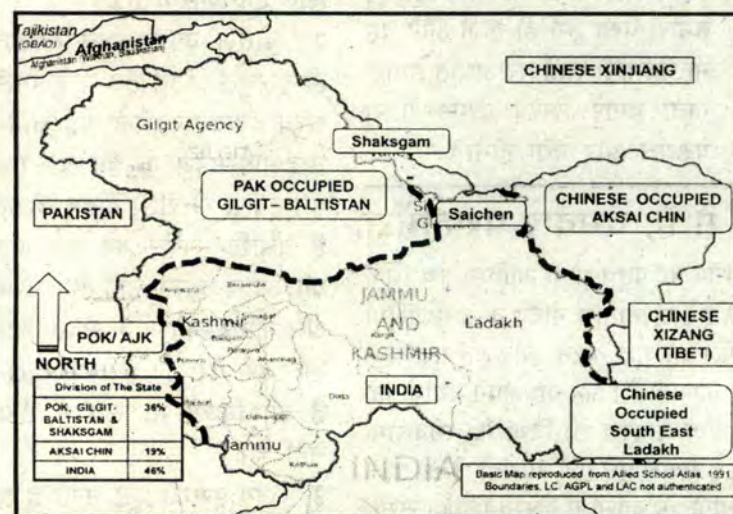
वे धार्मिक रूप से भी उत्तेजित थे कि धार्मिक आधार पर वे अंग्रेजों की सत्ता को मानें या न मानें? और क्या अंग्रेजों के खिलाफ जिहाद करना उनका फर्ज बनता है या नहीं? अंग्रेजों ने मुसलमानों की इस मानसिक स्थिति का बड़ी गहराई से अवलोकन किया और अनेक मौलानाओं से ऐसे फतवे दिलवाये कि अंग्रेजों के खिलाफ मुसलमानों का जिहाद करना उचित नहीं है क्योंकि अंग्रेज मुसलमानों के किसी भी धार्मिक कार्य में बाधा नहीं डाल रहे हैं। परन्तु मुसलमान बड़ी बेचैनी अनुभव कर रहे थे और मौलानाओं की अंग्रेज परस्ती ने इसे और भी ज्यादा बढ़ा दिया था। मौलाना शाह अब्दुल अजीज (१७६३-१८२४ ई० ने) फतवा दिया कि अंग्रेजों के खिलाफ मुसलमानों का जिहाद उचित नहीं है।

मौलाना शाह अब्दुल अजीज का फतवा

मौलाना शाह अब्दुल अजीज दिल्ली के एक अति प्रतिष्ठित मुस्लिम परिवार में से थे। ये ३ भाई थे और तीनों की ही इस्लामी धर्मक्षेत्र में अच्छी प्रसिद्धि थी। १७६६ ई० में मराठों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और मुगल बादशाह को दाड़ी पकड़ कर गद्दी से उतार दिया तथा उसकी पेन्शन बांध दी। शहजादे, शहजादियों की पेन्शन १३ रु० प्रति माह तक

सत्ता मराठों के पास से अंग्रेजों के पास गई। अंग्रेजों ने बड़ी तेजी से दिल्ली में शासन व्यवस्था को ठीक किया। स्थानीय व्यवस्था तो वास्तव में मराठे ही ठीक कर चुके थे और अंग्रेजों को तो वह एक तरह से बनी बनाई अवस्था में ही मिली। यह मुसलमानों के लिए कई रूपों में बड़ी अपमानजनक स्थिति थी। पहिले वे मराठों से हारें और दिल्ली की सत्ता खो बैठे। ५ वर्ष के मराठा शासन ने उन्हें कुचल कर रख दिया, फिर सत्ता अंग्रेजों के पास चली गई। वे अंग्रेजों से भी लड़ने की स्थिति में नहीं थे। उनका कोई योग्य नेता नहीं था तथा उनके धर्मगुरु अंग्रेजों के हाथ बिक चुके थे। उनमें भयंकर बेचैनी थी। अंग्रेज समझते थे कि मुसलमान धार्मिक उन्माद में जल्दी लड़ने को तैयार हो जाता है और फतवे इसमें बड़ा काम करते हैं। इस कारण उन्होंने इसे पहिले से ही रोक देने के लिये एक 'प्रतिरोधक-टीके' के रूप में मौलाना शाह अब्दुल अजीज से एक फतवा दिलवाया जो निम्न है—

“आज हिन्दोस्तान और दिल्ली में किसी भी मुस्लिम बादशाह या धर्मगुरु का आदेश नहीं चलता। सैनिक शक्ति और नागरिक शासन सब अंग्रेजों के पास है। अंग्रेजों ने प्रशासन एवं न्याय के



दुर्दशा न होती। आज कश्मीरी हिन्दू जिस दुरवस्था में देश के अनेक भागों में शरणार्थी शिविरों में रह रहे हैं, वह उनके पूर्वजों के पापों का ही फल है।

गलत फतवा और वहाबी जिहाद

रायबरेली का सय्यद अहमद एक संदिग्ध चरित्र वाला व्यक्ति था जो पहिले, अमीर खाँ पिण्डारी के गिरोह में था। उसने यह सोचा कि क्यों न हज करके कुछ सबाब (पुण्य) कमा लिया जायें। १८२२ ई० में हज पर जाने के पश्चात् उसे हाजी सय्यद अहमद और मौलवी सय्यद अहमद के नाम से जाना जाने लगा।

वह १८२२ ई० का समय था और अंग्रेज बहुत कुछ भारत में अपने पैर जमा चुके थे। सतलुज

परम अपमान का समय था जब उन्हें बार-बार सिखों से हारना पड़ा और सिख सरदार हरी सिंह नलवा ने तो पठानों को खैबर दर्रे के उस पार तक खदेड़ दिया। अफगानिस्तान के शासक शाहशुजा की बेगम और वह स्वयं अपने भाई द्वारा ही निष्कासित होने के बाद बहुत दिन तक रणजीत सिंह की दया के पात्र बनकर लाहौर रहे। महाराजा रणजीत सिंह ने उनसे कोहिनूर हीरा वापिस ले लिया जो नादिरशाह द्वारा लूटकर पहिले ईरान फिर अफगानिस्तान ले जाया गया था। यही नहीं, सिख राज्य के विरुद्ध एक षड्यंत्र रचने का पता लगने पर महाराजा रणजीत सिंह ने अफगान शासक की बेगम, शाहजादियों एवं अन्य शाही घराने की महिलाओं के कपड़े

(पिछले अंक का शेष)

विदेशी दुष्प्रचार व दुराग्रह

कुछ नया अधिकतर विदेशी विद्वानों की मान्यता है कि भारतीय लोग मौखिक रूप से पढ़ते-पढ़ाते थे। वे लिखना नहीं जानते थे। इतिहास लिखने में उनकी रुचि नहीं थी। प्राचीन भारतीयों में कालगणना का कोई विचार नहीं था। आर्य लोग बाहर से आये और यहाँ के कूल निवासियों (द्रविड़) लोगों को जीतकर यहाँ बस गये। सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा आदि) को आर्यों ने बाहर से आकर नष्ट किया। मानव जाति का इतिहास लगभग ५००० वर्ष पुराना है। आदमी का पूर्वज बन्दर व चिंपाजी हैं आदि। संक्षेप में कहा जा सकता है कि ऊपर की सभी बातें अवैज्ञानिक, असत्य व कोरा दुष्प्रचार है। यह बात आज जग जाहिर हो चुकी है कि विदेशी विद्वान मैक्समूलर, विलमसन, मैकडोनल, रुडोल्फ वेबर, ग्रिफिथ, विन्टरनिट्ज, मोनियर विलियम्स आदि सभी का मुख्य उद्देश्य एक ही था, जो मैक्समूलर ने अपनी पत्नी को १८६६ में लिखे पत्र में स्पष्ट किया था कि मेरा यह वेदों का संस्करण तथा मेरा वेदभाष्य उत्तरकाल में भारत के भाग्य पर भारी प्रभाव डालेगा। यह उनेक धर्म ग्रन्थ हैं और मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि 'मेरा कार्य उनकी (भारतीयों) दीर्घकालीन आस्तिक भावना को निर्मूल कर देगा।' अध्यापक गोल्डस्टुकर ने तो इस रहस्य का उद्घाटन किया था कि राथ, बेवर, विहटलिंग, आदि विद्वान लेखक किसी रहस्यपूर्ण कारण से इस बात के लिए दृढ़ संकल्प है कि जैसे भी संभव हो भारत का गौरव नष्ट किया जाय।

गतवर्ष (जुलाई २००७) तीन वरिष्ठ लेखकों—श्री कृष्ण रामास्वामी एण्टोनिओ द निकोल्स एवं अदिति बनर्जी द्वारा सम्पादित एक अंग्रेजी पुस्तक "इनवेडिंग दि सैक्रेड—एन एनैसिस ऑफ हिन्दुज्म स्टडीज इन अमेरिका" मुम्बई में विमोचित की गयी। यह पुस्तक कई वर्षों के शोध का परिणाम बतायी गई है। इसमें कहा गया है। "भारत के मुकाबले अमेरिका के बुद्धिजीवियों में धर्म सम्बन्धी एक महत्वपूर्ण विद्या है तथा सैकड़ों शोधकर्ता हिन्दू तथा दूसरे भारतीय धर्मों पर काम करते हैं। उनमें से अधिकतर स्कालर भारतीय धर्म व संस्कृति के बारे में

मर्यादा पुरुषोत्तम राम की ऐतिहासिकता

डॉ. सत्यपाल सिंह

जान-बूझकर झूठी व्याख्या व गलत अनुवाद करके भ्रम व दुराग्रह फैलाने में लगातार व्यस्त है। उनकी सोच पुरानी सामंतवादी व मिशनरी दृष्टिकोण से प्रभावित है उनका तथाकथित शोध कुछ शक्तिशाली समुह (कारटल) द्वारा चालित पक्षपातपूर्ण, भ्रामक तथा अविश्वसनीय है।

हमें यह जानकर आश्चर्य ही होगा कि मैकाले को एक भी भारतीय भाषा का ज्ञान न था, परन्तु उसके सम्पूर्ण भारतीय बुद्धिमता का ज्ञान न था, परन्तु उसने सम्पूर्ण भारतीय बुद्धिमता का उपहास किया, जेम्स मिल ने कभी भी भारत की यात्रा न की पर उसने भारत का इतिहास लिखा। मैक्समूलर, विन्टरनिट्स, ग्रिफिथ आदि भारतीय धर्म व संस्कृति पर लिखने वाले किसी भी विदेशी विद्वान को वैदिक व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष का ज्ञान न था पर उन सब ने वेदों व वैदिक ग्रन्थों का अनुवाद किया और स्वयं सिद्ध प्रतिष्ठित व्याख्याकारों की हैसियत भी ले ली। वैदिक परम्परा की कालगणना के अनुसार सृष्टि का समय ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष है और संकल्प मन्त्र "ओ३म् तत्सत अद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धं श्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमै कलियुगे कलिप्रधमचरणे...गताब्दे" की गणना से भारतीयों ने सृष्टि रचना (मनुष्योत्पत्ति काल) से लेकर आज तक काल की तथा इतिहास की धारा को अक्षुण्ण रखा है। मनुष्य उत्पत्ति काल को अभी तक १ अरब ६७ करोड़, २६ लाख, ४६ हजार, ११४ वर्ष हो चुके हैं। कुछ वैदिक विद्वानों का यह भी मानना है कि मनुष्यों की उत्पत्ति सातवें मन्वन्तर वैवस्वत मनु से हुई। उसके पूर्व के मन्वन्तरों में सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी, समुद्र, वनस्पति, पशु आदि पैदा हुए। अगर हम वैवस्वत मनु से ही मनुष्य उत्पत्ति का काल लें तो भी आज तक १२ करोड़, ५ लाख, ३३ हजार, १०८ वर्ष हो गये। इससे इतना तो तय

ही है कि मनुष्यों का इतिहास बहुत लम्बा है। भारतीय शुरु से ही लिखना जानते थे। ऋग्वेद में वाणी के दो रूप बताये गये हैं— एक दृश्य और दूसरा श्रव्य। दृश्य



का अर्थ लिखा हुआ रूप है और श्रव्य का अर्थ ध्वनि (मौखिक) है। भारत में लिपि का प्रचलन अति प्राचीन काल से रहा है। प्रकृति प्रदेश भोजपत्र व ताड़पत्र धरती पर आदमी के आने से पहले ही प्रचुर मात्रा में मौजूद थे। जैसे कागज स्थायी नहीं, ऐसे ही भोजपत्र व ताड़पत्र भी स्थायी न थे। मौसमी कारणों से खराब होने पर पुस्तकों की प्रतिलिपि तैयार की जाती थी। अन्यथा भारत में अत्यंत प्राचीन ग्रन्थ आज कैसे मिलते? वेद—शास्त्र—ज्योतिष ग्रन्थों और बड़े-बड़े काव्यों को कैसे याद रखा जा सकता था? हाँ कुछ लोग अवश्य थे जो एक या अधिक वेदों को कण्ठस्थ करने में गर्व अनुभव करते थे। अगर यह कहा जाये कि उस समय सबकी बुद्धि इतनी प्रखर तथा स्मरण शक्ति आज के मुकाबले में कई गुणा अधिक थे। तब तो यह बात भी डार्विन के विकासवाद के विरुद्ध जाती है। सच्चाई यही है कि भारतीय लिखना जानते थे और बहुत लिखते थे। विश्व के किसी भी देश में इतना विशाल साहित्य भण्डार लिखा जाने का प्रमाण और क्या हो सकता है?

डार्विन के विकासवाद सिद्धान्त की अव्यावहारिकता व अवैज्ञानिकता को अब तो कुछ विदेशी विद्वान भी मानने लगे हैं

अपनी धार्मिक आस्था के कारण जहाँ पहले कुछ पश्चिमी वैज्ञानिक पृथ्वी की आयु लगभग ६००० वर्ष मानते थे आज से ही लोग पृथ्वी की उम्र ३.६६ से ४.३ अरब वर्ष पूर्व

की मानने लगे हैं। जब पृथ्वी इतनी पुरानी है तो आदमी इतने लम्बे अन्तराल के बाद क्यों आया, इसका उत्तर कठिन है अमेरिकन विद्वान श्री "माणकलक्रमी" तथा "डीवोलूशन ऑफ मॉन" ने यह सिद्ध किया है कि डार्विन के सिद्धान्त में कोई तथ्य नहीं है तथा आदमी इस धरती पर लगभग २ अरब वर्ष पूर्व आया। क्रीमों तथा उनके सहयोगी लेखक रिचार्ड थामसन ने बहुत से पुरातात्विक उदाहरण दिये हैं जो निस्सन्देह यह सिद्ध करते हैं कि बहुत बार वैज्ञानिकों को ऐसे तथ्य मिले हैं जो आज इतिहास, भाषा, विज्ञान में फैलाये गये काफी दुराग्रहों की पोल खोलते हैं। वैज्ञानिक पत्र-पत्रिकाओं ने इन खोजों को प्रकाशित भी किया पर "डार्विन के विकासवाद" तथा ५००० वर्षों की 'मानवजाति की मर्यादा' के लगाये गये चर्मों ने इनको ज्यादा महत्त्व नहीं दिया। ये तथ्य सिद्ध करते हैं कि मानव जाति का इतिहास करोड़ों वर्ष पूर्व का है।

आस्था में अज्ञानता

श्रीराम व रामायण को ऐतिहासिक असत्य व कल्पना की उड़ान बताने वाले विदेशी तथा उनके देशी उच्छिष्ट भोजी जितने जिम्मेदार हैं, उससे कम जिम्मेदार हमारे अपने ही रामचरित्र पर लिखने वाले कवि तथा दूसरे विद्वान

भी नहीं हैं रही सी कसर आज 'रामकथा' करने वाले 'रामलीला' करने करवाने वाले लोगों ने पूरी कर दी। सच्ची आस्था को न जानकर ईश्वर के स्वरूप से अनभिज्ञ हम लोगों ने श्रीराम को ईश्वर व भगवान् का अवतार बना दिया। वहीं पञ्चतन्त्र की कहानियों की तरह हमने वेदों के विद्वान् व्याकरणाचार्य 'बुद्धिमतां वरिष्ठम्' हनुमान को बन्दर बना दिया, रामसेतु बनाने इंजीनियर जामवन्त को भालू/रीछ मान लिया, प्रसिद्ध सर्जन वैद्य सुषेण और अंगद बालि आदि को भी बन्दर बना दिया। सीता के अपहरण के बाद आकाश में रावण से लड़ाई करने वाले गृधकूट के भूतपूर्व राजा जटायु को सिद्ध पक्षी बना दिया। अधिक गलत बात तो यह है कि उस जमाने को सबसे सुन्दर व मन्त्रवित् विदुषी नारी 'तारा' का विवाह एक वान (बन्दर) बालि से करा दिया। माता सीता को जमीन से पैदा होने वाली और अन्त में जमीन में समाने वाली बना दिया और न जाने कहाँ-कहाँ तक हमारी कल्पना की असम्भव उड़ान चलती रही। वाल्मीकि ने तो राम को मनुष्य ही माना और उन्हें एक श्रेष्ठ पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम जानकर अपने ही समय में (समकालीन होते हुए) राम कथा लिखी थी। राम में मनुष्योचित भावनाएँ भी दर्शायी थी। उपन्यास की तरह कल्पितमात्र बनाकर तथा रामायण के मनुष्य पात्रों को पशु-पक्षी बताकर हमने श्रीराम व रामायण की ऐतिहासिकता पर प्रश्न चिह्न लगा दिये। हम तो यहाँ पर भी नहीं रुके। हमने तो श्रीराम को कलंकित करने के लिए कुछ कथाएँ भी गढ़ लीं। राम ने कभी भी सीता का परित्याग कर उसे गर्भवती अवस्था में वन में नहीं भेजा और न वाल्मीकि ने ऐसा लिखा। हमने तो तपस्या करते हुए ऋषि शम्बूक का वध भी राम से करा दिया और शम्बूक को शूद्र बताया किन्तु वाल्मीकि ने ऐसा कहीं भी नहीं लिखा।

कोई भी विद्वान् तपस्वी ऋषि कभी शूद्र नहीं होता। पर वर्तमान में उपलब्ध रामायण में ऐसा प्रक्षेप करके हमने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को स्त्रियों व शूद्रों पर अत्याचार करने वाला बना दिया। वाल्मीकि के राम तो नरों में श्रेष्ठ हैं पर नारायण नहीं, पुरुषों में पुरुषोत्तम हैं पर परमेश्वर नहीं। (शेष अगले अंक में)



कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं



प्रतिष्ठा में,

श्री आदित्यनाथ योगी जी,

माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश।

विषय : उत्तर प्रदेश में पूर्ण शराबबंदी लागू करने एवं सभी बूचड़खानों को बंद करने की मांग।

महोदय,

उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनने एवं भाजपा को भारी बहुमत दिलाने के लिये आपको अखिल भारत हिन्दू महासभा की ओर से बधाई देते हैं। हिन्दू महासभा परिवार से जुड़े होने व प्रखर हिन्दूवादी व राष्ट्रवादी होने के कारण आपके मुख्यमंत्री बनने पर हिन्दू महासभा परिवार अति प्रसन्नता का अनुभव कर रही है। हमें विश्वास है कि आपके नेतृत्व में प्रदेश की जनता का कल्याण होगा तथा आपके हिन्दू सुखमय व शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। हम आपको आश्वासन देते हैं कि सभी कार्यों व अभियानों में अखिल भारत हिन्दू महासभा आपका पूर्ण सहयोग व समर्थन करेगी।

आपसे अनुरोध है कि उत्तर प्रदेश की जनता के हित में निम्नलिखित निर्णय तुरंत लेने की कृपा करें:-

1. संपूर्ण प्रदेश में पूर्ण शराबबंदी तत्काल लागू करें।
2. संपूर्ण प्रदेश में सभी बूचड़खानों को तत्काल प्रभाव से बंद करा दें।
3. कैलाश मानसरोवर की तरह ही अमरनाथ व चारधाम यात्रियों को भी आर्थिक सहायता प्रदान करें।
4. धार्मिक कार्यक्रमों, उत्सवों, रामलीलाओं व कथाओं के आयोजन के लिये अनुमति की प्रक्रिया को सरल बनायें।
5. गायों की हत्या करने वालों व हिन्दू देवी-देवताओं का अपमान करने वालों को कठोर दंड देने का आदेश दें।

सादर,

भवदीय

चन्द्रप्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,

महंत श्री आदित्य नाथ जी महाराज

माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश,

सादर नमस्कार।

हिंदुस्थान के सबसे अधिक जनसंख्या वाले प्रदेश, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री चुने जाने पर अखिल भारत हिन्दू महासभा की ओर से कृपया कोटिशः हार्दिक बधाइयाँ स्वीकार करें। संपूर्ण देश और देश के बाहर के अनेक सामाजिक हिन्दू संगठनों में आपके मुख्यमंत्री बन जाने से उत्साह की लहर दौड़ गई है और प्रदेश में हिंदुओं के दमन और हिंदू कन्याओं, किशोरियों और युवतियों के मुसलमानों द्वारा हो रहे अपहरण और तत्पश्चात् निकाह के वातावरण से हिन्दू समाज विश्वभर में पीड़ा का अनुभव करता रहा है। इतिहास में ऐसा उल्लेख है कि हिंदुस्थान का विभाजन उत्तर प्रदेश के मुसलमानों और अलीगढ़ के अंग्रेजी पढ़े कट्टर मुस्लिम उलेमाओं के षडयंत्रों से हुआ। विभाजन के बाद भी उत्तर प्रदेश में पिछले कई दशकों में वही प्रक्रिया फिर से तेज गति से बढ़ रही थी। आपके पदासीन होने से यह विश्वास जगा है कि देवाधिदेव भगवान महादेव हिंदुस्थान और हिन्दुओं पर कृपा कर रहे हैं।

इसलिए कृपया आनंद के वातावरण में सब हिन्दुओं की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ग्रहण करें।

प्रसंगवश कुछ निवेदन भी निम्नलिखित रूप में किए जा रहे हैं :-

1. प्रदेश में लाखों मस्जिदें, दरगाहें, खानकाहें, मजारें कब्रिस्तान और पीर हैं, जिनके द्वारा उत्तर प्रदेश की हजारों एकड़ अत्यंत उपजाऊ भूमि घेर ली गई है।
2. अनेक स्थानों पर अनेक कब्जे सपा सरकार की अन्देखी के कारण हुए।
3. भविष्य में इनके निर्माण स्थापना पर नियंत्रण हेतु जिलाधिकारी की अथवा पुलिस अधीक्षक की लिखित अनुमति अनिवार्य कर दी जाए किन्तु ऐसा कोई भी स्थान खेती की

भूमि पर नहीं बनना चाहिए।

4. उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति (अब सेवा निवृत्त) श्री शंभुनाथ श्रीवास्तव के इस निर्णय को कि उत्तर प्रदेश में मुसलमान अल्पसंख्यक नहीं हैं, लागू कर दिया जाए और यदि आवश्यक हो तो अहमदियों, बोहरों, कदियानियों आदि को अल्पसंख्यक की परिभाषा में शामिल किया जा सकता है।

5. उत्तर प्रदेश में कई लाख मदरसे हैं, जिनमें कुरान की उन आयतों को भी जोर-शोर से पढ़ाया जा रहा है, जिनका उल्लेख न्यायाधीश जिले सिंह लोहाट ने अपने कई दशक पहले के निर्णय में इस रूप में किया था कि जब तक कुरआन में वे हैं तब तक विश्व में शांति नहीं होगी, उन आयतों को मदरसों के पाठ्यक्रमों में से उसी तरह निकलवा दी जाएँ, जिस तरह मिस्र में इजराइल ने दबाव डालकर निकलवा दी हैं।

6. मदरसों की पढाई में हिंदी की अनिवार्यता की जाए और जो मदरसे ऐसा न करें, उनका सरकारी अनुदान बंद कर दिया जाए।

7. कब्रिस्तानों के प्रसार पर विशेष नजर रखी जाए और उनके विस्तार को रोका जाए ताकि प्रदेश की भूमि इस तरह बर्बाद न हो। मिस्र में कब्रिस्तान की भूमि का बड़े नियंत्रित ढंग से प्रयोग किया जाता है और विस्तार नियंत्रित किया गया है।

प्रदेश में वक्फ बोर्ड के कब्जे में जो भी खेती योग्य भूमि है, उसका तत्काल अधिग्रहण कर लिया जाए और उसका उपयोग भूमिहीन किसानों को देकर किया जाए। विश्वास है कि समय और परिस्थिति को ध्यान में रखकर ये सब कार्य शीघ्र आपके नेतृत्व में हो जाने से देश की रक्षा सुनिश्चित होगी। जब आप समझें तो मिलने का समय भी सूचित कराने का कष्ट करेंगे।

सादर,

भवदीय,

चन्द्रप्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 6 का

सूफियों द्वारा भारत का.....

अजमेर पर हमला कर दिया। हिन्दू मंदिरों का सहार कर उसने अपने वायदे को निभाया।

2. लखनौती बंगाल में रहने वाले सुहरावर्दी शेख जलालुद्दीन ने उत्तरी बंगाल के देवताला (देव महल) में जाकर एक विशाल मंदिर का विध्वंस कर उसे पहले खानकाह में तब्दील किया फिर हजारों हिन्दू और बुद्धों को इस्लाम में दीक्षित किया।

सूफियों द्वारा हिन्दू राज्यों पर इस्लामिक शासकों द्वारा हमला करने के लिए उकसाना

9. चिश्ती शेख नूर कुतुब आलम ने बंगाल के दिनाजपुर के राजा गणेश की बढ़ते शासन से क्षुब्ध होकर जौनपर के इस्लामिक शासक सुल्तान इब्राहिम शाह को हमला करने के लिए न्योता दिया। गणेश राजा ने भय से अपने बेटे को इस्लाम कबुल करा अपनी सत्ता बचाई।

2. शेख गौस द्वारा ग्वालियर के किले को जितने में बाबर की सहायता करी गई थी।

3. शेख अहमद शाहिद द्वारा नार्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंस में हजारों अनुयाइयों को नमाज पढ़ने के बाद सिखों के राज को हटाने के लिए इस्लाम के नाम पर रजामंद किया गया।

सूफियों का हिन्दुओं के प्रति सौतेला व्यवहार

हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक के नाम से प्रसिद्ध सूफियों का हिन्दुओं के प्रति व्यवहार मतान्ध और संकुचित सोच वाला था।

9. सूफी वलीउल्लाह का कहना था की मुसलमानों को हिन्दुओं के घरों से दूर रहना चाहिए जिससे उन्हें उनके घर के चूल्हे न देखने पड़े। यही वलीउल्लाह सुल्तान मुहम्मद गजनी को खिलाफत-ए-खास के बाद इस्लाम का सबसे बड़ा शहंशाह मानता था। उसका कहना था की मुहम्मद के इतिहासकारों ने नहीं पहचाना की मुहम्मद गजनी की जन्मपत्नी मुहम्मद साहिब से मिलती थी इसीलिए उसे जिहाद में आशातीत सफलता प्राप्त हुई। हिन्दुओं पर अथाह अत्याचार करने वाले गजनी की प्रशंसा करने वाले को क्या आप हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रतीक मानना चाहेंगे?

2. सूफी सुहरावर्दी शेख जलालुद्दीन द्वारा अल्लाह को हिन्दुओं द्वारा ठाकुर, धनी और करतार जैसे शब्दों का प्रयोग करने से सख्त विरोध था।

इस लेख के माध्यम से हमने भारत वर्ष के पिछले 9200 वर्षों के इतिहास में से सप्रमाण कुछ उदहारण दिए हैं जिनसे यह सिद्ध होता है सूफियों का मूल उद्देश्य भारत का इस्लामीकरण करना था। अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, दिल्ली के निजामुद्दीन औलिया, बहराइच के सालार गाजी मियां के विषय में कब्र पूजा: मूर्खता अथवा अन्धविश्वास नामक लेख में विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा। आशा है इस लेख को पढ़कर पाठकों की इस भ्रान्ति का निवारण हो जायेगा की सूफी संतों का कार्य शांति और भाईचारे का पैगाम देना था।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का बिहार में सभी बूचड़खाने व...

अपराध पर चिन्ता व्यक्त किया तथा मांग की कि मुख्यमंत्री बिहार के अपराध पर तत्काल अंकुश लगायें। उन्होंने हिन्दू महासभा कार्यकर्ताओं से बिहार विधानसभा के अगले चुनाव व लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुट जाने का आह्वान किया। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री वीरेश त्यागी ने कार्यकर्ताओं से कहा कि प्रदेश में गौरक्षा का अभियान मजबूती से चलायें। उन्होंने कहा कि गौ हत्यारों पर अंकुश लगाने व गायों की रक्षा का कार्य मजबूती से करें। प्रदेशाध्यक्ष जर्नादन उपाध्याय ने कहा कि बिहार प्रदेश में हिन्दू महासभा का संगठन तेजी से बढ़ रहा है। अगले लोकसभा व विधानसभा का चुनाव हिन्दू महासभा मजबूती से लड़ेगी। उन्होंने कहा कि सदस्यता अभियान जोरो से चल रहा है। हिन्दू महासभा हिन्दू हितों के लिये कटिबद्ध है।

शेष पृष्ठ 1 का प्लास्टिक के तिरंगे पर सरकार....

चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों से मांग की है कि राष्ट्रध्वज का सम्मान किसी भी कीमत पर सुरक्षित हो तथा राष्ट्रध्वज का अपमान करने वाले पर कड़ी कार्रवाई हो।

शेष पृष्ठ 4 का ईयर बड से संगीत सुनना.....

किया। शोधकर्ताओं ने शोर से होने वाली परेशानी और टिनीटिस की समस्या को भी मापा। नतीजों ने दिखाया कि परीक्षण के दौरान 900 किशोरों में से 86 को यानी 20.0 फीसदी को टिनीटिस की परेशानी महसूस हुई। उनमें बहरेपन के जो शुरुआती लक्षण मिले, वे वयस्कों में टिनीटिस की लंबे समय से चली आ रही समस्या के समान थे। यह अध्ययन 'साइंटिफिक रिपोर्ट' जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

टिनीटिस के लक्षण : टिनीटिस से पीड़ित व्यक्ति के कान में लगातार ऐसी आवाज गूँजती है, जिसका कोई बाहरी स्रोत नहीं होता। यह आवाज घंटी या सीटी बजने जैसी, किसी गूँज या फुफुकार जैसी या चीं-चीं-चूँ-चूँ जैसी भी हो सकती है। पहले यह उम्रदराज लोगों की बीमारी समझी जाती है, पर अब किशोरों में भी काफी देखी जा रही है। किशोर या वयस्क इसको गंभीर नहीं मानते, जबकि इसकी अनदेखी का नतीजा बहरापन हो सकता है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामूलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नहीं, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

:- तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....	150/- रुपये
द्विवार्षिक.....	300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....	1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

“हिन्दू सभा वार्ता” के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय बैंक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का इतिहास पुर्नलेखन, गलत फतवा.....

समस्त अधिकार अपने हाथ में ले लिये हैं और किसी भी अदालत में मुस्लिम फौजदारी और दीवानी 'शरीयत-कानून' नहीं चलता। अंग्रेजों ने टैक्स लगाने, लगान वसूल करने और दण्ड के समस्त अधिकार भी अपने हाथ में ले लिये हैं। कोई भी बड़ा नवाब या रईस बिना अंग्रेजों की आज्ञा के दिल्ली में नहीं घुस सकता। यही स्थिति सारे हिन्दोस्तान में है। परन्तु अंग्रेज बहादुर ने इस्लामी मजहबी मामलों में कोई जोर-जबरदस्ती नहीं की है। मुसलमान अपने दीनी (धार्मिक) मामलों में आजाद है और अंग्रेज सरकार रोजा, नमाज, जकात, हज और शरीयत में कोई रुकावट नहीं डाल रही। इस तरह हिन्दोस्तान 'दारुल-हरब' (गैर-मुस्लिम शासित देश) हो गया है और अंग्रेजों की हुकूमत एक तरह से 'दारुल अमन' (शान्ति क्षेत्र) की है। इस कारण अंग्रेजों के खिलाफ मुसलमानों का जिहाद जायज (उचित) नहीं होगा/है।' (फतवा-ए-अजीजी, मतब मुज्ताबाई, देहली (9063) जिल्द 9, पृ० 90)

मौलाना शाह अब्दुल अजीज ने यह भी तर्क दिया कि जिहाद का फतवा किसी 'दारुल इस्लाम' (इस्लामी शासित देश) में ही दिया जाता है, जिसमें कोई इस्लामी सुल्तान या खलीफा जिहाद की अगुवाई कर सके और जिहादी उसके नाम पर लड़ सकें।

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 2 का सेवक व साधक को.....

चाहिए। साधना को बीच में रोका तो साधक कैसा और सेवक ने स्वामी का कार्य पूरा हुए बिना विश्राम किया तो वह सेवक ही कैसा! सेवक तो अथक रूप से अनवरत सेवा करता है, यही उसकी साधना है। जो अपने कर्तव्य का प्रेमी होता है वह विश्राम नहीं करता। संत ने सीख दी है कि आराम किया तो राम छूट जायेगा। यहाँ आराम का तात्पर्य लौकिक या शारीरिक तौर पर है। मानसिक रूप से आराम करना अथवा मन के संकल्प-विकल्प को कम करके शांत व अंतर्मुख होना, आत्मा में विश्राम पाना यह तो कार्य-साफल्य की सर्वोत्तम कुंजी है। हनुमानजी भी आत्माविश्रान्ति पाते थे, प्रतिदिन ध्यान करते थे। ध्यान में विश्राम पाना यह तो जीवन में परम आवश्यक है। दुनियावी सुख की चाह की तो साधना छूट जायेगी। आराम करना है तो अपने-आप में आराम करो। दूत, सेवक और साधक कैसा होना चाहिए यह बात हनुमानजी के चरित्र से प्रकट होती है। तुलसीदासजी ने सुंदरकांड में जो सुंदर सीख दी है वह सबके लिए सुखकर है।

शेष पृष्ठ 7 का पेप्सी-कोक शीतल.....

आम जनता में बिक्री बढ़ाने का दूसरा नशा क्रिकेटर एवं फिल्मी हीरो-हीरोईन पैदा करते हैं। कम्पनियाँ इन भंडेलों को करोड़ों रुपया अपने प्रचार के लिए देती हैं और ये टुकड़खोर अपने लालच में आम जनता को भारी नुकसान पहुँचाते हैं।

6. इन पेय-पदार्थों का विशेष स्वाद और फ्लेवर (गन्ध) बनाने के लिए कृत्रिम गंध मिलाई जाती है। सभी कृत्रिम गंध हानिकारक होती हैं। विशेष स्वाद के लिए ग्लिसराल और एल्कोहल जैसे पदार्थ भी मिलाते हैं। (ग्लिसराल पशुओं के मांस से बनाया जाता है।)

इस प्रकार पेप्सी, कोका-कोला की संरचना में पाई जाने वाली सभी वस्तुएँ (रंग, गैस, मीठा, तेजाब, परिजरवेटिव, नशा, स्वाद, फ्लेवर) स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं। अब तो सी.एस.ई. (सेन्टर फोर साइंस एंड एनवायरमेंट) की जाँच रिपोर्ट ने सिद्ध कर दिया है कि पेप्सी, कोका-कोला, थम्सअप, लिम्का, सेवेन अप, ब्लू पेप्सी, स्पाईट, मिरिंडा जैसी 92 विदेशी कम्पनियों के ब्राण्डों में जो कीटनाशक पाये गए हैं उनके नाम हैं-लिण्डेन, डी.डी.टी. मेलाथियान और क्लोरपापीरफास। ये सभी भयंकर जहर हैं। विदेशी कम्पनियों के ब्राण्ड जहाँ इतने घातक हैं, वहीं नकली पेय जो उनसे भी अधिक प्रचलन में हैं, बहुत ही घातक एवं जहरीले हैं अतः इनका सेवन मौत को निमंत्रण देना है। ऐसे लोगों का उद्देश्य केवल पैसा कमाना है। इन लोगों को जो हमारे स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करते हैं, सख्त सजा दी जानी चाहिए। अतः निःसंकोच कहा जा सकता है कि पेप्सी, कोका-कोला का मतलब जब से 90 रुपये खर्च करके जहर खरीदना और अपने स्वास्थ्य की बरबादी के साथ-साथ देश को गुलामी की ओर धकेल देना है। एक जागरूक और देशभक्त नागरिक का कर्तव्य बनता है कि इस डकैती से स्वयं बचे और दूसरों को सावधान करके देश को गुलाम होने से बचाए।

दिनांक 12 अप्रैल से 18 अप्रैल 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
हिन्दू महासभा स्थापना दिवस	13 अप्रैल	बुधवार
वैसाखी	13 अप्रैल	बुधवार
डॉ० अम्बेडकर जयंती	14 अप्रैल	वीरवार
गुरुतेग बहादुर जयंती	18 अप्रैल	मंगलवार

यह भी सच है

तलाक बंदी

तीन तलाक बंदी के समर्थन में माननीय इलाहाबाद उच्च न्यायालय का परामर्श सराहनीय है। मुस्लिम समाज में यह प्रथा उनकी अपनी ही महिलाओं के प्रति घोर अन्याय व अत्याचार है। अनेक मुस्लिम धर्म गुरु इसके पक्ष में खड़े हैं तो कइयों ने इसका विरोध करके भारत सरकार को भी ललकारने की कुचेष्टा की है। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में एक धार्मिक कुरीति को बनाये रख कर उस समाज की महिलाओं को अन्धकार में धकेलते रहना क्या उचित है? आज आधुनिक विज्ञानमय समाज में तीन तलाक मानवता पर एक कलंक नहीं तो और क्या है? अपने समाज की महिलाओं को इस व्यवस्था में रखकर उसे व्याभिचारी बनाने से क्या मुस्लिम पुरुषों को कोई संतोष मिलेगा?...संभवतः नहीं हां कुछ कट्टरपंथियों की वर्षों से चली आ रही उनकी अधिनायकवादी दादागिरी पर अंकुश अवश्य लगेगा? वस्तुतः तीन तलाक, हलाला व बहुविवाह से पीड़ित मुस्लिम महिलाओं की सजगता व सक्रियता ने ही न्याय की मांग करके अपने स्वतंत्र अधिकारों के लिए संघर्ष छेड़ा है। लेकिन यह हमारे तथाकथित धर्मनिरपेक्ष समाज पर एक करारा तमाचा है, जो धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देते नहीं थकता परंतु मुस्लिम युवतियों व महिलाओं पर दशकों से हो रहे ऐसे अमानवीय अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने से भी डरता है। केंद्र सरकार द्वारा गठित विधि आयोग द्वारा पिछले दिनों इन सब विवादों को दूर करने के लिए एक सर्वे भी कराया गया है। संभवतः उसके परिणाम भी मुस्लिम महिलाओं के पक्ष में ही होंगे। इसमें भी कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिये कि भविष्य में सर्वोच्च न्यायालय से भी मुस्लिम महिलाओं को उनके संघर्ष का समुचित न्याय मिलेगा? निःसंदेह न्यायपालिका जनता के अधिकारों की रक्षा एक अभिभावक के रूप में करती है। अतः कानूनों को व्यवस्था सामाजिक जीवन को उन्नति की ओर ले जाने के लिए की जाती है, किसी के जीवन को अंधेरी कोठरी में बंद करने के लिए नहीं।

हिन्दू लुटे, पिटे या मरे कौन कहे

कुछ दिनों से अमरीका में निर्दोष हिन्दुओं को ईसाई अमरीकियों द्वारा निशाना बना कर उनकी हत्या की जाने तक के समाचार आ रहे हैं। यह कितना घृणास्पद, अत्याचारी व निंदनीय अमानवीय कार्य है? परंतु हमारे देश के तथाकथित सेक्युलर, मानवाधिकारवादी, बुद्धिजीवी व मीडिया जगत आदि सब मौन है। फिर वे सब गुजरात के मोदी के विरोध में व कश्मीर के आतंक व अलगाववादियों के पक्ष में क्यों हड़कंप मचाते रहें? देश-विदेश में भारत की छवि को धूमिल करने वाली तीस्ता जावेद, अनुधरुति राय, मेघा पाटेकर व निर्मला देशपांडे आदि सब कहां लुप्त हो गयीं? अवैध विदेशी धन के बल पर भारतीय संस्कृति व हिन्दू धर्म के विरुद्ध नकारात्मक वातावरण बनाने वाले आज कहां खो गये हैं? ईसाई या मुसलमान के झूठे आघातों को महिमामंडित करके देश को कटघरे में खड़ा करने वाले अमरीका में निर्दोष हिन्दुओं की मृत्यु पर चुप क्यों हैं? हिन्दुओं का उत्पीड़न व संहार चाहे अफगानिस्तान में हो, पाकिस्तान व बंगला देश में हो या भारत सहित विश्व के किसी भी कौने में हो इन तथाकथित स्वयंभू भारत भक्तों की संवेदनायें नहीं जागती। जबकि सैकड़ों-हजारों निर्दोषों के हत्यारं मजहबी आतंकवादियों को बचाने के लिये इन जैसे कुछ आसाधारण भारतवासियों की नींदें तक उड़ जाती हैं। यह कैसी सहिष्णुता है जो कुछ असाधारण भारत भक्तों के मानसिक दिवालियेपन के घातक परिणामों को करोड़ों साधारण भारतवासियों को भोगने को विवश करती है? लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व (२८.१०.२०१५) विसाहड़ा (ग्रेटर नोएडा) काण्ड का जन्मदाता गोवंश भक्षक अखलाक की रहस्यमय मौत पर आंसू बहाने वाले व विश्व में भारत की उदार-सहिष्णु संस्कृति को कलंकित करने वाले साहित्यकार कहां हैं? क्या उनके पास अब लौटाने को कोई और पुरस्कार शेष नहीं...या अब उनको राष्ट्रवादी बन कर मीडिया जगत में छाने की कोई आवश्यकता नहीं। क्या अमरीका आदि देशों में मारे जाने वाले हिन्दू मानव नहीं हैं, क्या उनके कोई मानवाधिकार नहीं हैं, क्या उनका हिन्दू होना कोई दोष है? हिन्दू लुटे, पिटे या मरे किसी को कोई सरोकार नहीं। कोई क्यों इन निर्दोष हिन्दुओं के संहारों पर बोलेगा, लिखेगा या कोई गोष्ठी व सेमीनार आदि करेगा? किसी क्योंकि कौन इसके लिये किसको प्रायोजित या स्पान्सर करेगा? यह कहना अनुचित नहीं होगा कि इन समस्त नकारात्मक सोच वालों का केवल एक सूत्री एजेंडा होता है कि भारत को अस्थिर करने के लिये राष्ट्रवादी शक्तियों पर येन केन प्रकारेण आक्रामक बने रहो और अपने विदेशी आकाओं और प्रायोजकों को प्रसन्न रखो।

विनोद कुमार सर्वोदय

कबिरा खड़ा बजार में

नाच न आवे, आंगन टेढ़ा



पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में बड़ी हार का मुंह देखने वाले दलों का आरोप है कि ईवीएम में गड़बड़ी कर उन्हें चुनाव हराया गया है। हालांकि यह आरोप लगाने से पहले वह यह भूल गये कि कभी इन्हीं ईवीएम की बदौलत वह भी सत्ता तक पहुँच चुके हैं। इस आरोप को चुनाव आयोग ने बेबुनियाद बताया है तो केंद्र में सत्तारुढ़ पार्टी के नेताओं की तरफ से इसे हार की खीझ उतारना बताया जा रहा है। ईवीएम में गड़बड़ी का आरोप लगाने वाली बसपा और आम आदमी पार्टी ने अपने समर्थकों के हवाले से मिली रिपोर्टों को आधार बनाकर जो दावे किये हैं उनके पक्ष में हालांकि कोई सुबूत नहीं पेश किये हैं। दूसरी ओर चुनाव आयोग आज भी अपने इस दावे पर दृढ़ है कि ईवीएम से छेड़छाड़ किसी भी तरह से संभव नहीं है और चुनाव पूरी पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ ही कराये जाते हैं। उत्तर प्रदेश की ही बात करें तो सभी चुनाव पूर्व सर्वेक्षण और चुनाव बाद होने वाले एक्जिट पोल बसपा की दयनीय स्थिति का अंदाजा लगा रहे थे जबकि पार्टी प्रमुख मायावती अपनी सरकार बनने के प्रति आशावान थीं। चुनाव परिणाम वाले दिन जैसे ही बसपा २० से कम सीटों पर सिमटी, पार्टी की मुखिया मायावती ने भाजपा पर ईवीएम में गड़बड़ी कर धोखाधड़ी से चुनाव जीतने का आरोप लगा दिया, यही नहीं चुनावों में सत्ता गँवाने वाले मुख्यमंत्री अखिलेश यादव भी मायावती के इस आरोप का एक तरह से समर्थन करते नजर आये। दो दिन बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को भी लगा कि जब सभी राजनैतिक पंडित पंजाब में आम आदमी पार्टी की जीत की भविष्यवाणी कर रहे थे तो पार्टी हार कैसे सकती है। उन्हें भी ईवीएम में गड़बड़ी नजर आयी और उन्होंने चुनाव आयोग से मांग की कि दिल्ली नगर निगम के चुनाव बैलेट पेपर पर कराये जाएं। इसके अलावा केजरीवाल ने यह मांग भी की कि पंजाब में लगभग ३२ स्थानों पर ईवीएम में दर्ज मतों की तुलना वीवीपीएटी वोटर वेरीफाइड पेपर ऑडिट ट्रायल से कराई जाए, जहां पेपर ऑडिट प्रणाली सक्रिय थी। दिल्ली विधानसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी को जो ७० में से ६७ सीटें मिली थीं उसके बारे में केजरीवाल का मानना है कि भाजपा को चूंकि अपनी जीत के प्रति अति आत्मविश्वास था इसलिए उसने ईवीएम में गड़बड़ी नहीं की। हालांकि केजरीवाल गोवा के चुनाव परिणाम पर खामोश हैं जहां उनकी पार्टी ने अपने आंतरिक सर्वेक्षणों में आप को २५ सीटें तक मिलने की बात कही थी जबकि हकीकत यह रही कि राज्य की ४० में से ३६ सीटों पर आप उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गयी। केजरीवाल से यह पूछा जाना चाहिए कि लोकसभा चुनावों में भी कहीं भाजपा को २८२ सीटें मिलना ईवीएम की गड़बड़ी तो नहीं थी, साफ है कि ऐसे आरोप तभी लगाये जाते हैं जब हार के असल कारणों की समीक्षा से मुंह मोड़ना हो। यह बात विश्व प्रसिद्ध है कि सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनाव करवाने वाले संस्थान भारतीय निर्वाचन आयोग को उसकी निष्पक्षता के लिए जाना जाता है। विभिन्न देश अपने यहां चुनाव प्रक्रिया को सरल और निष्पक्ष बनाने के लिए भारतीय निर्वाचन आयोग की सेवाएं लेते रहते हैं। यही नहीं संयुक्त राष्ट्र की ओर से भी भारतीय निर्वाचन आयोग के अधिकारियों को विभिन्न देशों में चुनावों के समय पर्यवेक्षक बना कर भेजा जाता रहा है। यही नहीं पाकिस्तान में भी भारत की ईवीएम प्रणाली की काफी तारीफ होती है। आजकल तो इंटरनेट के जरिये वोटिंग की बात कही जा रही है और गुजरात ने एक बार निकाय चुनावों के दौरान ऐसा सफल प्रयोग करके दिखाया भी है। अपने मन की शंका को दूर करने के लिए देश का समय बर्बाद करने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

